www.thearyasamaj.org

पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2014-16

ओ३म्

श्रृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१६, अंकः-७, जनवरी, सन्-२०१७, सं०-२०७३ वि०, दयानंदाब्द १९२, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११७; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

देश स्वराज्य-सुराज्य से आगे रामराज्य की ओर बढ़े

देशभक्तों को साम्प्रदायिक बताकर सच्ची राष्ट्रीयता को कुचला न जाय!

आधी शताब्दी पूर्व के स्व. प्रकाशवीर शास्त्री के शब्द आज भी प्रासंगिक हैं।

ये वे ही तीन शब्द हैं जो भारतीय स्वाधीनता की लड़ाई लड़ते समय विशेष रूप से सुनने में आते थे और प्रेरणा एवं स्फूर्ति के पर्यायवाची से बन गये थे। इनको प्रकाश में लाने वालों में स्वामी दयानन्द, दादा भाई नौरोजी, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक और महात्मा गांधी के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। कांग्रेस का जन्म १८८५ में हुआ जिसके आरम्भ में प्रत्येक प्रान्त के कुछ अंग्रेजी पढ़े-लिखे महानुभाव एकत्रित होकर सार्वजनिक महत्व के प्रश्नों पर विचार करते थे। डा.पट्टाभिमीतारमैया लिखित इतिहास के आधार पर कांग्रेस के मंच से स्वराज्य शब्द १९वीं शताब्दी के प्रथम दशक में उस समय उच्चारित हुआ जब दादा भाई नौरोजी राष्ट्रपति थे। स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है की घोषणा उसी शताब्दी के दूसरे दशक के मध्य में लोकमान्य तिलक ने की। गांधी जी ने उसके साथ रामराज्य शब्द तो बहुत बाद में आकर जोड़ा है। परन्तु कांग्रेस की स्थापना से भी दस वर्ष पूर्व १८७५ में कर्मयोगी स्वामी दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में स्वराज्य और सुराज्य दोनों शब्दों को साथ-साथ लिखकर भविष्य की एक बहुत बड़ी रूपरेखा खींची थी।

श्याम जी कृष्ण वर्मा, देवतास्वरूप भाई परमानन्द, गोपालकृष्ण गोखले, पंजाब केसरी लाला लाजपतराय, महात्मा तिलक, स्वातंत्र्यवीर सावरकर, आदि के अथक परिश्रमों, बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाकउल्ला, भगतसिंह और यतीन्द्रनाथदास के बलिदानों और महामना मालवीय जी, अमरशहीद स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा गांधी जी आदि की तपस्याओं से १५ अगस्त १९४७ को खण्डित भारत में स्वराज्य आया तो, पर सुराज्य अभी तक भी न आ पाया फिर रामराज्य की तो चर्चा ही व्यर्थ है। भारतीय जनता ने स्वराज्य का स्वप्न कहां तक अनुभव किया है यह तो असन्तोष की बढ़ती हुई लहरें ही अच्छा बता सकती हैं। वैदिक भाषा में तो यों 'स्वर्विदुः' स्व को जानने वाले (ऋषि) बहुत ही ऊंचे अर्थों में स्व का प्रयोग किया गया है परन्तु व्यावहारिक भाषा में मनुष्य का स्व से जहां तक लगाव है यदि उस स्व का राज्य नहीं तो फिर स्वराज्य सन्तोष का कारण नहीं बन सकता। किसी भी देश के शासन को चार चांद उसी समय लगते हैं जब उस देश के नागरिक परिवार पन उसमें अनुभव करने लगें और उसके उत्थान- पतन को अपना जीवन-मृत्यु मानकर चलें परन्तु जहां तक जनता का यह कर्त्तव्य है वहां कौटुम्बिक भावना राज्य के प्रति उनमें स्वाभाविक रूप से उत्पन्न करना राज्य का भी कर्त्तव्य है। जब शासक अपने को शासित से पृथक् मानकर अपने सुख-दुःख और लाभ- हानि में ही सर्वस्व समझ बैठता है तो अपने विपरीत वातावरण बनाने में प्रजा को अवसर देता है।

महाभारत में युधिष्ठिर के राज्याभिषेक में आये अधीनस्थ राजाओं ने स्पष्ट घोषणा की थी हम महाराज युधिष्ठिर को किसी लोभ-लालच अथवा डर से कर नहीं देते हैं अपितु इसकी धार्मिकता (कर्त्तव्यनिष्ठा) पर हम इतने मुग्ध हैं कि इसे सहर्ष कर देते हैं और हृदय से इसे सम्राट् स्वीकार करते हैं।

यद्यपि यह सही है भारत का स्वराज्य अभी नया है और समस्यायें भी किसी नये स्वाधीन राष्ट्र को इतनी लम्बी दासता से मुक्ति के बाद जो आनी चाहियें उससे कहीं अधिक हैं। लेकिन एक राज्य के हटते ही दूसरे राज्य के आने पर प्रजा को स्वाभाविक रूप से कुछ सान्त्वना मिलने की आशायें होती हैं परन्तु उस पर अपेक्षाकृत इसके कर वृद्धि होती चली जाये, न्याय-चिकित्सा-शिक्षा और जीवन के रहन-सहन की साधारण आवश्यकताओं में भी कहीं सन्तापन ढूंढने पर भी न मिले तो 'स्वराज्य आया' यह सर्वसाधारण को कम अनुभव हृदयंगम होता है। वैसे ही सांसारिक स्थिति का प्रभाव जनता के पास पैसे की कमी और आवश्यकताओं का बढ़ जाना तथा मंहगा हो जाना और तिस पर भी यह शासन के बोझ कितनी देर निभ सकेंगे। भारत के प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के धार्मिक और राजनैतिक विचारों से कितना ही मतभेद रखते हुए हर व्यक्ति उनकी नीयत की प्रशंसा ही करता है। उस पर आज तक किसी को सन्देह का अवसर नहीं आया। स्वराज्य मिलने से पहले ही अंग्रेजों की उस मनोवृत्ति का जो बार-बार यह कहा करते थे 'हमने भारत में आकर उसे इतना आगे बढ़ाया' नेहरू जी ने प्रतिवाद करते हुए अपनी हिन्दुस्तान की कहानी (डिस्कवरी आफ इन्डिया) पुस्तक में लिखा है-

वे इस बात को भूल जाते हैं जिस वक्त वे यहां न आये थे हिन्दुस्तान बंजर, उजड़ा हुआ या जंगली देश नहीं था। बल्कि वह एक बहुत तरक्की-यापन और सुसंस्कृत राष्ट्र था जो अस्थायी रूप से वैज्ञानिक प्रगति में निष्क्रिय या पिछड़ा हुआ हो गया। आजाद कौमी सरकार की देखभाल में योजनाबद्ध तरक्की से चन्द बरसों में ही हिन्दुस्तान की शक्ल बदल जायेगी।

आगे चलकर इसी पुस्तक के ६७५ पृष्ठ पर अपने विचारों की शृंखला जोड़ते हुए माननीय लेखक ने लिखा है-

हिन्दुस्तान को दुनिया के हवाई सफर का केन्द्र बनाना चाहिये। रेल के जरिये हिन्दुस्तान एक ओर तो पश्चिमी एशिया और यूरोप से और दूसरी तरफ चीन और वर्मा से मिलेगा। इंग्लैण्ड, अमेरिका औ एशिया के वैभवों को देखकर नेहरू जी भारत को उससे भी अधिक समृद्ध शाली रूप में देखना चाहते हैं, परन्तु आज संसार की उस उन्नति और ऐश्वर्यों की दौड़ में दौड़ने लायक भारत के पैरों में मजबूती भी है या नहीं प्रश्न तो यहां आकर रुकता है। शासन के जिस यन्त्र को वह चला रहे हैं उसके पुर्जे भी उनका साथ उतना ही दे रहे हैं क्या? फिर नेहरू जी की प्रगतिशीलता और माननीय राजेन्द्र बाबू की सांस्कृतिकता विस्तृत हो तो कैसे? पीछे अभी अपने रंतर के कुछ अनुभवों के बाद १५ अगस्त १९५१ को जो नई देहली से हिन्दुस्तान समाचार पत्र का विशेषांक निकला था उसके सबसे ही पहले पृष्ठ पर चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य जी का एक लेख था जिसका शीर्षक ही यह था- 'हमें स्वराज्य नहीं सुराज चाहिये।'

८५ साल के बूढ़े चर्चिल ने जिसने भयंकर भवरों से इंग्लैण्ड की नाव को पार लगाया है, डी वेलरा और माओत्से तुंग के साथियों ने कभी अपने राष्ट्रो से अपनी तपस्याओं का मूल्य नहीं मांगा फिर सन् ४२ का प्रमाण पत्र लेकर जो नेहरू जी को घेरे हुए हैं, और योग्यता हो चाहे न हो उन स्थानों को पाने की लालसा में उचित-अनुचित ढंग प्रयोग में लाते हैं, तो राष्ट्र की गाड़ी कैस हिले? इस पर यदि नेहरू झुंझलाते हैं तो क्या बुरा करते हैं? इसीलिये ऐसे में सुराज्य की कल्पना मृगमरीचिका की भांति पीछे ही खिसकती चली जा रही है। स्वाधीन कराने के लिये राष्ट्र को जिन त्यागों की आवश्यकता होत है राष्ट्र-निर्माण के लिये तो उससे भी अधिक रहती है, अन्तर केवल इतना ही है स्वाधीन कराने में धन-जन का त्याग अधिक करना पड़ता है और राष्ट्र निर्माण में स्वार्थी मनोवृत्तियों की आहुति देनी होती है। चीन और हमारी स्थिति कुछ दिन पहले लगभग एक ही जैसी थी परन्तु नैतिक दृष्टि से आज वह राष्ट्र कितना ऊंचा उठ गया है। त्याग करने वालों में आज वहां के पदों के लिये न तो होड़ है और शासन की प्रमुख पार्टी के सदस्य होने के कारण न उस दल के सदस्यों के दोष क्षम्य हैं। आदर्श राष्ट्र बनाने के लिये उन लोगों का तो विशेष दायित्व हो जाता है जो यहां तक राष्ट्र की उस नाव को खेकर लाये हैं पर यदि उन्हें ही अपनी लिप्साओं पर अधिकार रखने का सामर्थ्य न रहे, फिर सुराज्य कैसा?

बहुत सम्भव है नयी उत्पन्न समस्याओं, लोगों के विशृंखलित जीवनों, व्यापार की अस्त-व्यस्तताओं और वर्षा आदि के प्रभाव में हमारे देश में चावल, गेहूं, चीनी और कपड़े का कुछ अभाव हो परन्तु इन सबसे अधिक अभाव है नैतिकता का जिससे यह अभाव अपेक्षाकृत कम होने के और बढ़ते चले जा रहे हैं। महामति चाणक्य से जब यह

(शेष पृष्ठ ३ पर.....)

विनय पीयूष

सूर्य से परिचय

उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय् सूर्यं स्वाहा।।

(यजु. : 7/41)

सूर्य की किरणें करातीं
सूर्य से परिचय हमारा!

जातवेदस सूर्य है
जाना सभी ने,
दिव्यगुण संपन्न है
माना सभी ने,

सूर्य की किरणें बनातीं
जगत ज्योतिर्मय हमारा!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

श्रेष्ठतम कर्म की श्रेष्ठतम आहुति

शतपथ ब्राह्मण (१.७.१.५) एवं तैत्तरीय उपनिषद् (३.२.१.४) ने घोषणा की हे कि 'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' जिसका समर्थन, अनुमोदन प्रायः सभी शास्त्रों और धर्मग्रन्थों ने किया। शब्द शास्त्र के प्रणेता महर्षि पाणिनि के अनुसार 'यज्ञ' शब्द 'यज्' धातु से निष्पन्न हुआ है; जिसके तीन अर्थ हैं- देवपूजा, संगतिकरण और दान। किसी कर्म के यज्ञमय होने की पहली कसौटी है कि वह पूजात्मक हो, दूसरी कसौटी है कि वह संगतिकरणात्मक हो और तीसरी कसौटी है, वह दानात्मक हो। इस कसौटी पर कसकर देखने पर ही किसी कर्म को यज्ञ कहा जा सकता है।

यज्ञ में हजारों आहुतियाँ भौतिक अग्नि में अर्पित की जाती हैं, जो संसार को सुंदर स्वास्थ्य प्रदान करती हैं, इसमें किसी भी तरह के संदेह की गुंजाइश नहीं है। किन्तु इस श्रेष्ठतम कर्म की श्रेष्ठतम आहुति क्या है? इस पर विचार करना जरूरी है। महर्षि कहते हैं- 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।' संसार का उपकार करने के लिए संसार की पीड़ा और दुःख का दूर करना आवश्यक है। इसके लिए यज्ञ की आहुतियों से प्रेरणा लेते हुए अधिक त्याग और बलिदान की आवश्यकता होती है।

अग्निहोत्र यज्ञ के समानान्तर ही जीवन यज्ञ चलता है। अग्निहोत्र यज्ञ का उद्देश्य ही है जीवन यज्ञ को सम्पूर्ण सुख-समृद्ध और दुःखों से रहित बनाना। यज्ञकर्ता जब जीवन यज्ञ में अपनी आहुति देता है तो वह उसकी श्रेष्ठतम आहुति होती है। ऐसी आहुति जो किसी प्राणी की प्राणरक्षा का निमित्त बनती है। अभी पिछले दिनों लखनऊ की गोमती नदी में डूबते हुए एक युवक पर किनारे खड़े एक युवक की निगाहें पड़ीं। तत्काल वह नदी में कूदा और डूबते हुए युवक को पानी से खींचकर बाहर ले आया। रक्षा करने वाले इस युवक का नाम था 'अभिनव'। अभिनव की सर्वत्र प्रशंसा हो रही है। अभिनव ने अग्निहोत्र यज्ञ में भले ही आहुति न दी हो किन्तु जीवन यज्ञ में उसने जिस साहस और वीरता का प्रदर्शन किया वह श्रेष्ठतम आहुति कही जायगी।

महर्षि याज्ञवल्क्य ने एक कथानक द्वारा इसे समझाने का प्रयास किया है। अनावृष्टि से पीड़ित किसी क्षेत्र में एक बहुत बड़ा यज्ञ हो रहा था; जिसमें अति उत्तम औषधियों से निर्मित बहुमूल्य आहुतियाँ दी जा रही थीं। एक श्रमिक के पास आहुति देने के लिए कुछ भी नहीं था। वह एक फावड़ा लेकर सूखाग्रस्त क्षेत्र में पानी निकालने के लिए धरती खोदने में जुट गया। फावड़ा चलाते चलाते उसका सम्पूर्ण शरीर पसीने से तर बतर हो गया। उधर विद्वत् जनों द्वारा आयोजित यज्ञ पूर्णता की ओर अग्रसर था। पूर्णाहुति को सन्निकट देख वह श्रमिक यज्ञ के ब्रह्मा से करबद्ध निवेदन करने लगा, श्रीमन् मेरे पास तो यज्ञ में आहुति देने के लिए कुछ भी नहीं है। मैं कैसे आहुति दूँ? यज्ञ-ब्रह्मा ने कहा, श्रमिक, तेरे मस्तक पर छलक रही स्वेद बिन्दुओं से श्रेष्ठ और कौन सी आहुति होगी। तुम्हारी यह आहुति अन्य सभी आहुतियों से श्रेष्ठ है।

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की एक कहानी है 'सबसे बड़ा हाजी'। इस कहानी में एक मुस्लिम नवयुवक अपने सबसे बड़े मजहबी अनुष्ठान 'हज़' यात्रा के लिए तैयार है। जहाज छूटने वाला है। तभी वह अपनी बीमार दादी से हज़यात्रा की इजाजत लेने जाता है किन्तु दादी अत्यधिक रुग्ण हैं, मरणासन्न हैं। युवक हजयात्रा छोड़ देता है और दादी की सेवा में जुट जाता है। कथाकार का संदेश है कि इस युवक के सेवाकार्य से बढ़कर हजयात्रा क्या होगी? हजयात्रा के स्थान पर अपनी दादी की सेवा में संलग्न यह नवयुवक 'सबसे बड़ा हाजी' है। इस नवयुवक का यह त्याग जीवन यज्ञ को अर्पित श्रेष्ठतम आहुति है।

मैं अपने जीवन के पृष्ठों पर नजर दौड़ाता हूँ तो आज से लगभग तीन दशक पूर्व मेरे मौसेरे भाई श्री रमेश चन्द्र तिवारी जिन्होंने पौराणिक तीर्थ मिश्रिख में आर्य समाज की स्थापना बाँकेलाल आर्य के सहयोग से की थी- मुझे अत्यंत दयनीय दशा में चौक क्षेत्र में मिले; उनके पैरों में बिवाइयाँ थीं, मलिन वस्त्र, बढ़ी हुई दाढ़ी। चिन्ता का कारण था पुत्र राजू (रवि प्रकाश) की किडनी का प्रत्यारोपण ऑपरेशन होना था। दो दिन के अन्दर पचहत्तर हजार रुपये पी.जी.आई. में जमा करना था। कई वर्षों के इलाज के चलते इतनी बड़ी रकम शिक्षा क्षेत्र में कार्य करने वाले के पास कहाँ से आती! पता चला साठ हजार रुपये की व्यवस्था वे कर चुके थे, पन्द्रह हजार की व्यवस्था अभी शेष थी। मैंने कहा भ्राता जी, आप चिन्ता न करें, मैं कोई न कोई व्यवस्था करूँगा। मेरे पास उस समय ईश्वर विश्वास के अलावा कोई धनराशि नहीं थी; तथापि दो दिनों में ही इं.जे.पी.अग्रवाल की विशेष सहायता तथा आर्यसमाज राजाजीपुरम, चन्द्रनगर, आदर्शनगर, इन्दिरा नगर एवं चौक की मदद से पन्द्रह हजार रुपये जुटाकर ठीक ऑपरेशन के दिन उन्हें सौंप दिये। यह मेरे जीवन की श्रेष्ठतम आहुति थी।

जीवन पर्यन्त लोकमंगल की साधना में संलग्न मेरे जैसे व्यक्ति पर एक बहुत बड़ी आपदा, सन् २०१६ की परिसमाप्ति पर आ गई। सहधर्मिणी श्रीमती सरला जी जो आर्य लोक वार्ता प्रकाशन की व्यवस्था देखती हैं, अचानक बाथरूम में पैर फिलसने से गिर गईं। पीड़ादायक कूल्हे का फ्रैक्चर हो गया। चरम सीमा की पीड़ा का अनुभव कर रही थीं। प्रख्यात आर्थोपैडिक सर्जन डॉ.डी.पी.सिंह, अलीगंज ने ०२.०१.१७ को ऑपरेशन की तिथि बताई, दो लाख तत्काल जमा करने थे। इतनी बड़ी धनराशि दो दिनों में कहां से आती?

'आर्य लोक वार्ता' के माध्यम से वैदिक शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार में अहर्निश संलग्नता ही मेरा व्यक्तित्व है। श्रीमती सरला जी इस प्रकाशन कार्य की संचालिका हैं। मेरे पास सबसे बड़ी पूंजी परमपिता परमात्मा के प्रति अटूट विश्वास है। अतः प्रभु की प्रेरणा से अनेक यज्ञकर्ताओं का इस जीवन यज्ञ में श्रेष्ठतम आहुति अर्पित करना स्वाभाविक ही है। जीवन यज्ञ में श्रेष्ठतम आहुतियों की अपेक्षा अभी भी बनी हुई है।

विजय कुमार शास्त्री

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१७२

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में अष्टम समुल्लास का अंश

नित्यत्व-विचार

पांचवां नास्तिक कहता है-कि सब पदार्थ उत्पत्ति और विनाश वाले हैं इसलिये सब अनित्य हैं।

श्लोकार्धेन प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ग्रन्थकोटिभिः।
ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः।।

यह किसी ग्रन्थ का श्लोक है-नवीन वेदान्ती लोग पांचवें नास्तिक की कोटि में हैं। क्योंकि वे ऐसा कहते हैं कि करोड़ों ग्रन्था का यह सिद्धान्त है-'ब्रह्म सत्य जगत् मिथ्या और जीव ब्रह्म से भिन्न नहीं।'

(उत्तर) जो सब की नित्यता नित्य है तो सब अनित्य नहीं हो सकता।

(प्रश्न) सब की नित्यता भी अनित्य है जैसे अग्नि काष्ठों को नष्ट कर आप भी नष्ट हो जाता है।

(उत्तर) जो यथावत् उपलब्ध होता है उसका वर्त्तमान में अनित्यत्व और परम सूक्ष्म कारण को अनित्य कहना कभी नहीं हो सकता। जो वेदान्तीलोग ब्रह्म से जगत् की उत्पत्ति मानते हैं तो ब्रह्म के सत्य होने से उसका कार्य असत्य कभी नहीं हो सकता। जो स्वप्न रज्जू सर्पादिवत् कल्पित कहैं तो भी नहीं बन सकता। क्योंकि कल्पना गुण है, गुण से द्रव्य और गुण द्रव्य से पृथक् नहीं रह सकता। जब कल्पना का कर्त्ता नित्य है तो उसकी कल्पना भी नित्य होनी चाहिए, नहीं तो उसको भी अनित्य मानो।

जैसे स्वप्न बिना देखे सुने कभी नहीं आता। जो जागृत अर्थात् वर्त्तमान समय में सत्य पदार्थ हैं उनके साक्षात् सम्बन्ध से प्रत्यक्षादि ज्ञान होने पर संस्कार अर्थात् उनका वासनारूप ज्ञान आत्मा में स्थित होता है; स्वप्न में उन्हीं को प्रत्यक्ष देखता है। जैसे सुषुप्त होने से बाह्य पदर्थों के ज्ञान के अभाव में भी बाह्य पदार्थ विद्यमान रहते हैं वैसे प्रलय में भी कारण द्रव्य वर्त्तमान रहता है। जो संस्कार के बिना स्वप्न होवे जो जन्मान्ध को भी रूप का स्वप्न होवें इसलिये वहां उनका ज्ञानमात्र है और बाहर

सब पदार्थ वर्त्तमान हैं।

(प्रश्न) जैसे जागृत के पदार्थ स्वप्न और दोनों के सुषुप्ति में अनित्य हो जाते हैं वैसे जागृत के पदार्थों को भी स्वप्न के तुल्य मानना चाहियें

(उत्तर) ऐसा कभी नहीं मान सकते क्योंकि स्वप्न और सुषुप्ति में बाह्य पदार्थों का अज्ञानमात्र होता है; अभाव नहीं। जैसे किसी के पीछे की ओर बहुत से पदार्थ अदृष्ट रहते हैं उनका अभाव नहीं होता; वैसे ही स्वप्न और सुषुप्ति की बात है। इसलिये जो पूर्व कह आये कि ब्रह्म जीवन और जगत् का कारण अनादि नित्य है, वहीं सत्य है।।5।।

छठा नास्तिक कहता है-कि पांच भूतों के नित्य होने से जगत् नित्य है।

(उत्तर) यह बात सत्य नहीं। क्योंकि जिन पदार्थों का उत्पत्ति और विनाश का कारण देखने में आता है वे सब नित्य हों तो सब स्थूल जगत् तथा शरीर घट पटादि पदार्थों को उत्पन्न और विनष्ट होते देखते ही हैं। इससे कार्य को नित्य नहीं मान सकते।।6।।

सातवां नास्तिक कहता है-कि सब पृथक्-पृथक् हैं। कोई एक पदार्थ नहीं है। जिस-जिस पदार्थ को हम देखते हैं कि उनमें दूसरा एक पदार्थ कोई भी नहीं दीखता।

(उत्तर) अवयवों में अवयवी, वर्त्तमान काल, आकाश, परमात्मा और जाति पृथक्-पृथक् पदार्थ समूहों में एक-एक हैं। उनसे पृथक् कोई पदार्थ नहीं हो सकता। इसलिये सब पृथक् पदार्थ नहीं किन्तु स्वरूप से पृथक्-पृथक् हैं और पृथक्-पृथक् पदार्थों में एक पदार्थ भी है।।7।।

आठवां नास्तिक कहता है-कि सब पदार्थों में इतरेतर अभाव की सिद्धि होने से सब अभावरूप हैं। जैसे 'अनश्वो गौः। अगौरश्वः' गाय घोड़ा नहीं और घोड़ा गाय नहीं। इसलिये सब को अभावरूप मानना चाहिये।

(उत्तर) सब पदार्थों में इतरेतराभाव का योग हो परनतु 'गवि गौरश्वेऽश्वो भावरूपो वर्तत एव' गाय में गाय और घोड़े में घोड़े का भाव ही है; अभाव कभी नहीं हो सकता। जो पदार्थों का भाव न हो तो इतरेतराभाव भी किस में कहा जावे?।।8।। *(क्रमशः)*

वेद प्रवचन

तीन देवियों की घर-घर में पूजा करो

❑पं.शिव कुमार शास्त्री

इळा सरस्वती मही तिस्त्रो देवीर्मयोभुवः।
बर्हिः सीदन्त्वस्त्रिधः।। *(ऋ. : 1/13/9)*

ऋषिः-मेधातिथि काण्वः।। **देवता**-तिस्त्रो देव्यः।। **छन्द**-निचृद् गायत्री।।

शब्दार्थ- (**इळा**) स्तुति योग्य, प्रशंसनीय, संस्कृति, (**सरस्वती**) वाणी, मातृभाषा, (**मही**) पूजायोग्य मातृभूमि (**अस्त्रिधः**) हिंसारहित, क्षमी न हानि पहुँचाने वाली (**मयोभुवः**) सुख-समृद्धि देने वाली (**देवीः**) दिव्यगुणों वाली (**तिस्त्रः**) तीन देवियाँ (**बर्हिः**) घर-घर को (**सीदन्तु**) प्रकाशित करें।

व्याख्या-

मन्त्र में तीन देवियों की गुणावली का वर्णन करते हुए परामर्श दिया गया है कि ये घर-घर को प्रकाशित करें।

सर्वप्रथम इस मन्त्र में '**इळा**'-संस्कृति की बात कही है। हमारे देश में प्रचलित और पल्लवित संस्कृति 'वैदिक संस्कृति' है। आजकल लोग इसे भारतीय संस्कृति कहने लग गए हैं, किन्तु यह उनकी भूल है। भारतीय संस्कृति नाम की कोई संस्कृति है ही नहीं। भारत में तो आस्तिक, नास्तिक, मुर्दे जलानेवाले, दबाने वाले, बौद्ध, पारसी, सिख, ईसाई और मुसलमान सभी हैं। सबके विचार और आचार भिन्न-भिन्न हैं, अतः भारतीय संस्कृति कोई नहीं है। हमारी संस्कृति का वास्तविक और शुद्ध नाम वैदिक संस्कृति है। वेद के शब्दों में यह प्रथमा संस्कृति है और **विश्ववारा**, विश्व के स्वीकार करने योग्य और विश्व को सुख और शान्ति देने वाली है। वेद ने मानव को, समस्त संसार को परिवार समझकर आत्मीयता और स्नेह से परस्पर व्यवहार करने का परामर्श दिया है। वेद कहता है तुम सबमें कोई छोटा-बड़ा नहीं है, तुम सब मिलकर चलो, सब मिलकर विचार-विनिमय करो, तुम सब के विचारों में तथा खाने-पीने में समानता हो, मैं तुम सबको समान उत्तरदायित्व के जूए में जोड़ता हूँ, प्राणिमात्र में तुम्हारे जैसा ही आत्मा है, सभी को दुःख-सुख की समान अनुभूति होती है, अतः अपने स्वार्थ के लिए किसी को हानि न पहुँचाओ।

इसके बाद दूसरी देवी है '**सरस्वती**'-मातृभाषा। इसकी भी हमारे देश में देश में पूजा तो क्या, अनादर ही हो रहा है। संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार करके भी अभी अंग्रेजी का मोह हमसे नहीं छूटता। इस मूर्खता के कारण अनेक बार विदेशों में हमारे राजनयिकों को अपमानित भी होना पड़ा है। रूस में विजयलक्ष्मी राजदूत बनकर गईं तो उनके सब परिचय-पत्र अंग्रेजी में थे। रूस में उन्हें अस्वीकार करते हुए कहा कि या तो ये पत्र भारत की भाषा में होने चाहिएँ अथवा रूस की भाषा में। किसी अन्य देश की भाषा में ये स्वीकार नहीं किये जा सकते। अपनी लोकसभा और राज्यसभा का दृश्य देखिये, यह प्रतीत ही नहीं होता कि हम भारत में हैं। बड़े कहलानेवाले घरानों का दृश्य देखिये, दुधमुँहें बालक होश सँभालते ही अंग्रेजी बोलने लगते हैं।

हमें तीव्र आन्दोलन करके इस मनोवृत्ति को परिवर्तित करना चाहिए और उत्तर भारत में बलपूर्वक अंग्रेजी का विरोध करना चाहिए। राजनैतिक कारणों से तमिलनाडु, बंगाल आदि प्रदेश हिन्दी का विरोध करते हैं, उन्हें उनके मार्ग पर चलने देना चाहिए। वे अंग्रेजी अपने प्रदेश में चलाना चाहें तो चलावें, किन्तु हिन्दीभाषी प्रदेश में सरकारी कार्यालयों में अंग्रेजी का प्रचलन कठोरता से रोकना चाहिए। कुछ समय में ही हमारी इस क्रियाशीलता से उनकी मनोवृत्ति अवश्य बदलेगी और हिन्दी के प्रति सहनशीलता उत्पन्न होगी। हिन्दीभाषी प्रदेश में पत्रों के पते देवनागरी में ही लिखने चाहिए। इस प्रकार हमारी मातृभाषा देवी हमारे घर में प्रतिष्ठित होगी और उसकी पूजा होगी।

मन्त्र में तीसरी देवी '**मातृभूमि**' की पूजा कही। इसके लिए भी भारत में बहुत करना शेष है। यदि मातृभूमि की स्वाधीनता की रक्षा और समृद्धि का विचार भारतीयों में दृढ़ हो जावे तो इससे हमारे चिन्तन और व्यवहार दोनों ही बदल जावेंगे। फिर हमारे सरकारी प्रतिष्ठान घाटे में नहीं चलेंगे। कार्यालयों में बाबुओं की मेजों पर फाइलों के ढेर नहीं लगे रहेंगे। जब भारत का कृषक खेतों में घोर परिश्रम करके, मजदूर कारखानों में जी-तोड़ मेहनत करके और उत्पादन बढ़ाकर, देश के वैज्ञानिक उपयोगी आविष्कार करके, भारत का अध्यापक-वर्ग बच्चों के कोमल हृदय और मस्तिष्क में सच्चरित्रता और मातृभूमि की भक्ति की भावना बद्धमूल करके, माता-पिता पूरे परिश्रम से बच्चों का शरीरिक और मानसिक विकास करने में अपनी शक्ति को खपाएँगे, तब इस तीसरी देवी मातृ भूमि की प्रतिष्ठा और पूजा होगी। *('श्रुति सौरभ' से साभार)*

www.thearyasamaj.org

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-६५

इदं राष्ट्रं पूर्वं प्रचितयवनैर्लुण्ठितमपि
निजोच्चैः संस्कारैरभवदिह जयि स्वेषु रिपुषु।
समाजं स्वं त्यक्त्वा सहसुमिलितास्ते सदसि नः
स गंगाकालिन्दीसदृशसहयोगो विजयते।।

माना कि बार-बार उमड़-घुमड़ कर
आने वाली यवन-सेनाओं ने
इस देश को रौंदा और
लूटा था !
फिर भी अपनी
उच्च संस्कृति के कारण
शीघ्र ही यह देश अपने विजेताओं पर
विजयी हो गया !
यूनानी लोग अपने समाज का
परित्याग करके
हमारे समाज का अंग बन गये।
वह मिलन
गंगा और यमुना के संगम जैसा
लुभावना था।

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

होता सदस्य परिचय-56

एशिया का प्रकाशमान व्यक्तित्व

डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक'

डॉ.रूपचन्द्र 'दीपक' का जन्म आषाढ़ कृष्णा दशमी, मंगलवार, १७ जून, १९५२ को भारतवर्ष - उत्तरप्रदेश - के जनपद बिजनौर में हुआ। इनकी माताजी का नाम श्रीमती मथुरा देवी और पिता का नाम श्री कल्याण सिंह था। इन्होंने हिन्दू इण्टर कॉलेज नगीना, बिजनौर से हाई स्कूल एवं इण्टरमीडिएट किया। हिन्दू कॉलेज मुरादाबाद से बी.एस-सी. के.जी.के.कॉलेज मुरादाबाद से एम.एस-सी. (गणित) और वर्धमान कॉलेज बिजनौर से बी.एड.किया। बाद में विश्व वेद परिषद से 'वेद भूषण', कानपुर विश्वविद्यालय से एम.ए.(दर्शनशास्त्र) और रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय से पी-एच.डी.(दर्शनशास्त्र) की। इनके शोध का विषय था- महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी, रवीन्द्र नाथ टैगोर और श्री अरविन्द के मूल्योन्मुखी शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता।

इन्होंने वर्ष १९७६-७७ में जूनियर हाइस्कूल के प्रधानाध्यापक, अगले सत्र में इण्टर कक्षाओं के गणित प्रवक्ता और तीसरे सत्र में हाईस्कूल कक्षाओं के विज्ञान-गणित अध्यापक के रूप में कार्य किया। तत्पश्चात् उ.प्र.लोक सेवा आयोग से उ.प्र.सचिवालय सेवा के लिए चयनित हुए और विभिन्न पदों पर रहते हुए संयुक्त सचिव के पद से सेवानिवृत्त हुए।

१५ अगस्त १९७२ को 'दीपक' नाम लेकर कविता लिखना प्रारम्भ किया। कविता, नाटक, कहानी, व्यंग्य और शेर, थोड़ा थोड़ा सभी विधाओं में लिखा है। आर्य समाज से जुड़ने पर लेख, ट्रैक्ट और पुस्तकें लिखीं, जिनमें मुख्य रचनायें है- 'सत्यमेव जयते', 'बुद्धिजीवियों का कर्त्तव्य', 'वैदिक धर्म की विशेषतायें', 'सर्व-कल्याण के स्रोत हैं वेद', 'प्रारब्ध और पुरुषार्थ', 'महर्षि दयानन्द के अनमोल वचन', 'वेद-प्रकाश', 'पर्व-विज्ञान', 'फाइव ग्रेट ड्यूटीज', 'क्रान्ति और शान्ति के आठ दिव्य सूत्र', 'मन की साधना'। स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती द्वारा लिखित ग्रंथ 'ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ द फिलॉसफी ऑफ दयानन्द' तथा पं.गंगाप्रसाद उपाध्याय द्वारा लिखित 'फिलॉसफी ऑफ दयानन्द' का क्रमशः 'स्वामी दयानन्द का वैदिक दर्शन' और 'ऋषि दयानन्द का तत्त्व-दर्शन' नाम से अनुवाद किया। ये दोनों अनुवाद 'गोविन्दराम हासानन्द' ने प्रकाशित किये हैं।

दीपक जी १ सितम्बर १९८१ को आर्य समाज के सदस्य बने और २ सितम्बर १९८२ से आर्य समाज शृंगारनगर के परिसर में रह रहे हैं। ये आर्य समाज शृंगारनगर के मन्त्री एवं प्रधान तथा आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, जनपद लखनऊ के मन्त्री व प्रधान रहे हैं।

इन्होंने आचार्य धर्मानन्द शास्त्री, आचार्य वीरेन्द्र मुनि शास्त्री और आचार्य विश्वदेव शर्मा से अष्टाध्यायी पढ़ी; सम्प्रति आचार्य प्रद्युम्न नैष्ठिक से अष्टाध्यायी महाभाष्य पढ़ रहे हैं। महात्मा दयानन्द जी से प्रत्याहार, स्वामी सम्बुद्धानन्द जी से सम्प्रज्ञात योग और स्वामी सत्यपति जी से असम्प्रज्ञात समाधि सीखी। दीपक जी को प्राप्त सम्मानों में- 'राष्ट्रभाषा रत्न' (२००१), 'साहित्य गौरव' (२००५), 'आर्य पुरोहित सम्मान' (२००६) तथा 'राइजिंग पर्सनलिटी ऑफ इण्डिया' (२००६) प्रमुख हैं।

आकाशवाणी लखनऊ से इनकी वार्ताएँ प्रसारित हुई हैं। लगभग एक दर्जन टेलीविजन कार्यक्रम प्रसारित हुए हैं। इन्होंने वेद प्रचारार्थ अमेरिका, जापान एवं नेपाल की यात्राएँ की हैं। लखनऊ में 'वैदिक उपदेशक विद्यालय' स्थापित किया है जिसका सत्रारम्भ संवत् २०७५ से होगा।

-राकेश माहना, मंत्री, आर्यसमाज शृंगारनगर, लखनऊ

(पृष्ठ 1 का शेष.....)

देश स्वराज्य....

पूछा गया राष्ट्रों का स्वराज्य कैसे सुरक्षित रहता है तों एक वाक्य में यह ही उत्तर उन्होंने दिया-

स्वराज्यस्य मूल चारित्र्यम्

अर्थात्-नैतिकता या ऊंचा चरित्र ही राष्ट्रों के स्वराज्य की रक्षा करता है जिसकी शासक और शासित दोनों में ही आवश्यकता पड़ती है।

गांधी जी के स्वप्न तो इससे भी बढ़कर थे। वह स्वराज्य और सुराज्य से भी बड़े शब्द रामराज्य की कल्पना मूर्तरूप में देखना चाहते थे। करांची कांग्रेस में स्वाधीन भारत की चर्चा करते हुए गांधी जी ने जो अपने विचार व्यक्त किये थे उन्हें सुनकर वशिष्ठ, चाणक्य और विदुर की परिपाटी यहां प्रचलित हो सकेगी ऐसी कल्पना सबको होने लगी थी। रामराज्य की चर्चा करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है-

दैहिक, दैविक, भौतिक तापा
रामराज्य काहु नहिं व्यापा।

दैहिक-दैविक और भौतिक शब्दों को लिखकर गोस्वामी जी ने सारे ही उन कारणों को जिन कारणों से ऐसे कष्ट आते हैं जिन्हें मनुष्य सहन नहीं कर पाता, महाराज राम के राज्य में न होना लिखा है। इसके अतिरिक्त भी रामराज्य की दुहाई देने वाले जहां रामराज्य में शारीरिक व्याधियां दैविक आपत्तियां और पंचमहाभूतों के अकारण कोप से बचने की चर्चा करते हैं वहां राम की उन व्यक्तिगत जीवन शिक्षाओं को क्यों भूल जाते हैं- (१) राम राज्य के अधिकारी थे सत्ता के भिखारी नहीं थे (२) राम को राजा होने के लिये जनमत की नहीं अपितु जनमत को राम की आवश्यकता थी (३) कालिदास ने जैसा लिखा है-

आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च
न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोप्याकार विभ्रमः।

राम को दशरथ द्वारा राज्याभिषेक के लिये आमन्त्रण देने पर और कुछ ही देर बाद वन-गमन की आज्ञा सुनाने पर कोई भी उन की आकृकित में हर्ष-शोक के चिन्ह नहीं दिखाई दिये। महाराज राम की वाल्मीकि के शब्दों में कहलाई गई वह प्रतिज्ञा तो आज भी शासकों का पथ प्रदर्शन कर सकती है-

द्विशरं नाभिसंधत्ते, रामो द्विर्नाभिभाषते

अर्थात्-राम का क्रोध अकारण ही नहीं होता एक बार धनुष पर चढ़ने के बाद तीर नहीं उतर सकता और ना ही बिना सोचे वह कुछ बोलते, क्षण-क्षण में परिवर्तन होने वाली वाणी भी राम के पास नहीं है, उसका कथन पत्थर की लकीर है।

महर्षि वेदव्यास ने भी महाभारत शान्ति पर्व में रामराज्य की सराहना करते हुए लिखा है-

विधवा यस्ये विषये नानाथाः कश्चनाभवन्
नित्यं सुभिक्षमेवासीत् रामे राज्य प्रशासति
अदंशमशका देशा नष्ट व्याल सरीसृपा
नान्योन्येन विवादोऽभूत स्त्रीणामपि कुतो नृणाम्
धर्मनित्याः प्रजाश्चासन् रामे राज्य प्रशासति।
सर्वा द्रोणदुघा गावो रामे राज्यं प्रशासति।

अर्थात्- राम राज्य में विधवा और अनाथ नहीं थे। खाना-पीना सदा सुलभ था। सम्पूर्ण देश में मच्छर, सिंह, सर्प, कानखजूरा और बिच्छू आदि का अभाव था पर्वतों में भले ही हों। किसी स्त्री का दूसरी स्त्री से झगड़ा नहीं होता था पुरुषों की तो चर्चा ही क्या? प्रजा धर्म में स्थिर थी, अधर्मी नास्तिक नहीं थे। प्रत्येक गौ न्यून से न्यून १६-३२ सेर तक दूध देती थी।

कभी कभी गांधी जी अपनी प्रार्थना सभा और भाषणों में यह भी कह दिया करते थे, मेरा राम दशरथ का बेटा राम नहीं है, मेरा राम तो घट-घट में व्यापक राम है, इस आधार पर भी यदि गांधी जी के रामराज्य शब्द को हम देखें तो राज्य तो बाद की बात है उस घट-घट व्यापी राम का अस्तित्व ही गांधी के अधिकांश भक्त स्वीकार करने को उद्यत नहीं। पिछले और इस पार्लियामेंट में अंगुलियों पर गिनने योग्य ही सदस्य ऐसे हैं जिन्होंने ईश्वर (राम) का नाम लेकर शपथ ली हो। भारतीय संस्कृति का मूलाधार ही आस्तिकता है जिसकी पग पग पर गांधी जी दुहाई देते रहते थे, और यह ही आस्तिकता भारतीयों के गत उच्च नैतिक जीवनों का साधन रही है। वर्तमान युग का विज्ञान भी जिस अनन्त सत्ता के आगे अन्त में नतमस्तक हो जाता है, धर्म-निरपेक्षता की आड़ में आज वह भी उपेक्षा का विषय बनती जा रही है। यूरोप के इंग्लैण्ड और अमेरिका जैसे राष्ट्रों की पार्लियामेंटों के अधिवेशन प्रतिदिन प्रार्थनाओं से आरम्भ होते हैं परन्तु प्रार्थना तो दूर सन् ३७ में जब कि वन्दे मातरम् का इतना विरोध था उससे असेम्बलियों के जो अधिवेशन आरम्भ होते थे आज वह भी प्रचलित नहीं है।

इन सब ही समस्याओं पर सोचते-सोचते अन्त में यहीं आकर बुद्धि ठहरती है, जैसा कि किसी कवि ने लिखा है-

उज्ज्वल रहा अतीत भविष्य भी महान् है।
यदि सम्भल जाय वो जो कि वर्तमान है।।

('मेरे सपनों का भारत' से साभार)

वाचनालय से

'वैदिक धर्म ही वास्तविक धर्म है!' शीर्षक **'टंकारा समाचार'** (नई दिल्ली) में प्रकाशित लेख में श्याम सिंह आर्य 'वेद निपुण' लिखते हैं कि मानवता ही मानव धर्म का मूल धर्म है। धर्म क्या है? 'धार्यते इति धर्मः' अर्थात् जिन गुणों को मानव धारण करे, ठीक उसी तरह जिस तरह से 'अग्नि' ने अपने 'अग्नित्व' को धारण कर रखा है। यह 'अग्नित्व' का गुण ही 'अग्नि' का धर्म है। यदि अग्नि से इसके गुण को अलग कर दिया जाये तो वह अग्नि न रहकर राख मात्र रह जायेगी। इसी तरह मानव को भी अपने मानवता के गुण- दया, अहिंसा, सदाचार, परोपकार आदि को हमेशा धारण करना चाहिए। मानव को असत्य, छल-कपट जैसे पाप कर्मों से दूर रहते हुए निश्छल हृदय से परमपिता परमात्मा का स्मरण करना चाहिए।...

धर्म की कसौटी यह है कि जो किसी देश, जाति अथवा वर्ग विशेष के हित की बात न कहकर मानवमात्र के लिए कल्याण की बात कहे अर्थात् जिसमें सार्वभौमिकता के गुण विद्यमान हों। वैदिक मानव धर्म ही इस पर खरा उतरता है। वर्तमान काल में मिथ्या मत-मतान्तरों तथा गुरुडमों ने भी अपने को धर्म का नाम देकर धर्म को इतना बदनाम कर दिया है कि मनुष्य अधर्म (सम्प्रदायवाद) को ही धर्म समझकर तथा उसके रंग-ढंग को देखकर धर्म से नफरत करने लगा है।

मसिक **'शान्तिधर्मी'** (जीन्द) ने हरिकृष्ण आर्य के लेख के माध्यम से 'ईश्वर उपासना के आठ सूत्र' बताये हैं। पहला सूत्र है- अपने दुर्गुणों को दूर करें। दूसरा सूत्र है-ईश्वर में दृढ़ विश्वास रखें। तीसरा सूत्र है-ईश्वर का स्वरूप जानें। लेखक लिखता है कि परमपिता परमात्मा का सत्य स्वरूप, चेतन स्वरूप, आनन्द-स्वरूप व अनन्त है। वह परमपवित्र, शुद्ध स्वरूप व सर्वान्तर्यामी हम सबके हृदयों में, आत्मा में विराजमान है। वह परमेश्वर स्वप्रकाशित ज्ञानरूप, निराकार है। उस निराकार ब्रह्म को ज्ञान सहित भक्ति द्वारा ही उपासक जान सकता है, अतः उस परम आत्मा को बाहर की प्रकृति में ढूंढना निरर्थक है।... चौथे सूत्र में भक्ति और उपासना करने का आग्रह करते हुए लेखक बताता है कि इसका अर्थ परमात्मा की आज्ञाओं का यथावत् पालन करना है। पांचवें सूत्र में शुद्ध ज्ञान, शुद्ध कर्म व शुद्ध उपासना के साथ-साथ प्रभु में अतिप्रेम व अपने पूर्ण सामर्थ्य से उपासना करने को कहा गया है। छठे सूत्र में बताया गया है कि कामना कैसी करें। लेखक कहता है कि हमें सांसारिक वस्तुओं और धन-सम्पत्ति की कामना नहीं करनी चाहिए। प्रार्थना करनी है प्रकाश के लिए, आत्मज्ञान के लिएत्र आत्मसुख आनन्द के लिये, शान्ति व सामर्थ्य के लिये। सातवां सूत्र है- अन्तर्मुखी बनें।... और आठवां अन्तिम सूत्र है- प्रभु को धन्यवाद दें।

साप्ताहिक **'आर्य सन्देश'** (नई दिल्ली) ने राजीव चौधरी के विचारपरक लेख के माध्यम से एक ज्वलन्त प्रश्न उठाया है- 'क्या जीवती वापस आयेगी?'

पाकिस्तान के सिंध की जीवती की उम्र बमुश्किल १४ साल है। जिस आदमी से उसकी शादी हुई है, उसने जीवती को अपने कर्ज के बदले खरीद लिया है। सूदखोर कर्ज के बदले कर्जदार की सबसे खूबसूरत तथा कमसिन लड़की को चुन लेते हैं। लड़की को इस्लाम में दाखिल कर लेते हैं।... उसे वह बीबी बना सकते हैं, दूसरी बीबी बना सकते हैं, काम करा सकते हैं, जिस्म फरोशी करा सकते है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, पाकिस्तान में हर साल १००० हिन्दू और ईसाई लड़कियों (ज्यादातर नाबालिग) को मुसलमान बनाकर शादी कर ली जाती है।... दक्षिण पाकिस्तान में इस तरह के काफी मामले सामने आते रहते हैं।... इन मामलों में न मीडिया के कैमरे पहुँचते हैं न पुलिस में सुनवाई होती है। अदालतें खामोश रहती हैं।

मासिक **'वैदिक पथ'** (हिण्डौन सिटी) में प्रकाशित डॉ.रवीन्द्र अग्निहोत्री के लेख 'प्रेमचन्द या मुन्शी प्रेमचन्द' में बताया गया है कि उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द के नाम में मुंशी लगाना प्रेमचन्द की मंशा के विरुद्ध है। लेख लिखता है कि वह 'प्रेमचन्द' से 'मुन्शी प्रेमचन्द' कब बने, यह एक रहस्य लगता है, क्योंकि न तो प्रेमचन्द द्वारा लिखे किसी पत्र या कृति पर यह नाम मिलता है और न उनके जीवनकाल में उनके किसी मित्र, प्रशंसक, आलोचक आदि ने उन्हें इस नाम से सम्बोधित किया। सम्मान के लिये उनके नाम से पहले 'श्री', 'श्रीयुत्', 'श्रीमान्' आदि प्रयोग तो मिलता है, पर 'मुन्शी' का नहीं।

डॉ.रवीन्द्र लिखते हैं कि प्रेमचन्द जी ने 'हंस' पत्रिका १९३० में शरू की। बाद में सह-सम्पादक के रूप में कन्हैयालाल मानिकलाल मुन्शी जुड़े।... दोनों सम्पादकों के नाम में पहले श्री मुन्शी का और उसके बाद प्रेमचन्द का नाम लिया गया- 'मुन्शी, प्रेमचन्द्र'। वास्तविकता से अनभिज्ञ लोगों ने अल्पविराम की उपेक्षा कर दी। 'मुन्शी' शब्द 'प्रेमचन्द' में साथ चस्पा कर दिया। कायस्थ परिवार में प्रेमचन्द के जन्म से उनकी इस भ्रान्ति को और बल प्रदान कर दिया। प्रेमचन्द का जन्म 'श्रीवास्तव' परिवार में हुआ था, पर उन्होंने न इसका प्रयोग किया, न कायस्थ जाति के सूचक 'मुन्शी' का प्रयोग किया।

मसिक **'शान्तिधर्मी'** (जीन्द) ने प्रो.धर्मवीर नम्बरदार का विचारपरक लेख 'क्या श्रीराम पुरुष प्रधान समाज के पोषक थे? यदि नहीं तो माता सीता की अग्नि परीक्षा का क्या औचित्य था? लेखक ने विभिन्न उदाहरणों से सिद्ध किया है कि राम का काल स्त्री-पुरुष समानता का काल था। प्रो.धर्मवीर कहते हैं कि सीता जी को भौतिक अग्नि में जलाया गया और वह जीवित बच गयीं, इसका न कोई तुक है, न आवश्यकता और न ही यह संभव है।

www.thearyasamaj.org

शुभाकांक्षा

'आर्य्य लोक वार्ता' का सितम्बर अक्टूबर अंक कल ही प्राप्त हुआ। इसमें अनेक स्वनामधन्य आर्यसमाजियों के देहावसान का समाचार पढ़कर दुःख हुआ। उनके अतिरिक्त मनवा-वाचा आर्य समाजी डॉ.मिर्जा हसन नासिर, जिनका निधन इस अंक के मुद्रण के पश्चात हुआ है, की गजल के निम्नांकित अंश को पढ़कर नासिर साहब के जीवन दर्शन की बहुत याद आई-

फूल बोकर जाइये गुलशन से आप
खारों के झुरमुट उगाना छोड़िये।
जिन्दगी को चाहिये जिन्दादिली
फिर क्यो 'नासिर' मुस्कराना छोड़िये।

इस अंक में छपा नासिर साहब का शुभाकांक्षा पत्र भी उनकी विद्वत्ता एवं समस्त धर्मों के प्रति समभाव को रेखांकित करता है। उनके देहावसान का समाचार पाकर मेरे एक मित्र के मुख से अनायास निकला था कि नासिर साहब सचमुच एक सच्चे मुसलमान थे। डॉ.मिर्जा हसन नासिर को मेरी भावभीनी श्रद्धांजलि!

-महेशचन्द्र द्विवेदी (पूर्व डी.जी.पी.)
1/137, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ

***

डॉ.वेद प्रकाश आर्य जी द्वारा सम्पादित 'आनन्दार्यामृताभिनन्दन्' अभिनन्दन ग्रन्थ अपने में अभूतपूर्व कृति है। किसी भी ग्रन्थ के प्रकाशन में लेखक, सम्पादक को कितना अथक श्रम व अपना मूल्यवान समय समर्पित करना पड़ता है यह वर्णनातीत है।

आर्य लोक वार्ता के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य जी ने अपने जीवन का प्रतिपल अध्ययन, लेखन, प्रकाशन और आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार में लगा दिया है, यह जन साधारण से संभव नहीं है। उनकी गहन विचार धारायें उनके लेखन, प्रवचन, समय समय पर कराये जाने वाले वैदिक कार्यक्रमों से मिलती रहती है। उनकी विनम्रता, सहयोग और शिष्टाचार से प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित होता है। आवश्यकता पड़ने पर वह अपना सक्रिय सहयोग देने में भी पीछे नहीं रहते हैं। निःस्वार्थ भाव से प्रकाशित होने वाली उनकी पत्रिका 'आर्य लोक वार्ता' एक ऐसी मशाल है जो स्थानीय व वाह्य जगत की वैदिक गतिविधियों को प्रकाशित करती है। समाज व देश के लिए महर्षि दयानन्द द्वारा दिखाया गया मार्ग कितना महत्त्वपूर्ण है इसे अपनाने में ही हित है। महर्षि द्वारा प्रतिपादित 'सत्यार्थ प्रकाश' जीवन के लिये वास्वविक प्रकाश है। *-कृष्ण स्वरूप चौधरी*

(पूर्व सदस्य, योजना आयोग)
4/305, विनीत खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ

***

श्री आनन्द कुमार आर्य अभिनन्दन ग्रंथ देखते ही अतीत के सुदूर प्रदेश में पहुँच गई और सोचते ही सोचते तमाम सुखद स्मृतियों के पृष्ठ खुल गये। यह बात लगभग १९५३-५५ की होगी, फैजाबाद में मेरे पिताजी स्वनामधन्य डॉ. दिनेश वर्मा एवं मिश्रीलाल जी का बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध था। मेरे यहां आया करते थे। दोनों ही आर्य समाज के प्रबल समर्थक थे। हमारा पारिवारिक जीवन पूर्ण रूप आर्यसमाज के सिद्धान्तों के अनुसार परिचालित होता था। प्रातः संध्या-वंदन व साप्ताहिक अग्निहोत्र हमारी दिनचर्या

में समाहित थे। मेरी मता एवं पिताजी दोनों ही आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे। विभिन्न पदों और बिना पद के वे लोग आर्य सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में लगे रहते थे। प्रत्येक वर्ष आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में पधारने वाले आर्य विद्वत्जन हमारे गृह पर भी आते थे यथा श्री अयोध्या प्रसाद आर्य, केदारनाथ आर्य, इन्द्रदेव वेदालंकार, प्रकाशवीर शास्त्री, माता प्रियंवदा देवी, मिश्रीलाल जी, मदन मोहन वर्मा जो विधान सभा के स्पीकर के पद पर रहे, डा.इन्द्रदेव, आचार्य नरेन्द्र देव जी प्रमुख हैं। मेरी माता व पिताजी बड़ी श्रद्धा से सबको भोजन के लिये भी आमंत्रित करते थे। सबके आने पर आर्य समाज व महर्षि दयानन्द रचित सत्यार्थ प्रकाश पर चर्चा हुआ करती थी।

श्री मिश्रीलाल जी ने टांडा नामक जनपद में कन्या विद्यालय की स्थापना की थी। उसके विकास हेतु भिन्न भिन्न योजनाओं पर विचार विमर्श, आर्य विचारों की शिक्षिकाओं की आवश्यकता, आर्यभक्तों से आर्थिक सहयोग आदि कार्यों में पिताजी व अन्य आर्य सदस्य अपना सहयोग देने में प्रसन्नता का अनुभव करते थे। उस समाय बालिकाओं की शिक्षा के लिए विद्यालय अतिअल्प थे और जहां थे, लोग अपनी पुत्रियों की शिक्षा के लिये उत्साहित नहीं रहते थे। आर्य समाज के मंच से, व्यक्तिगत संपर्क से श्री मिश्रीलाल जी व अन्य विद्वत्जनों ने लोगों को बेटी की शिक्षा के लिये प्रोत्साहित किया। टाण्डा एक छोटा कस्बा था जहां मुस्लिम आबादी अधिक थी। ऐसे में श्री मिश्रीलाल जी एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने वहां पर कन्या शिक्षा की ज्योति जलाई। मेरे पिता जी ने मुझे भी वहां शिक्षण कार्य के लिये भेज दिया था। वहां प्रतिदिन प्रार्थना और अग्निहोत्र का कार्यक्रम शिक्षण कार्य के साथ साथ संचालित होता था। आज वह विद्यालय अपने चरमोत्कर्ष पर है। उसमें पितातुल्य श्री मिश्रीलाल आर्य जी एवं उनके पुत्र श्री आनन्द कुमार आर्य जी का पूर्ण समर्पण और अथक श्रम है। आदर्श पिता के आदर्श पुत्र के रूप में श्री आनन्द कुमार जी अपने नाम को सार्थक कर रहे हैं। अपने रहन सहन व अपने मृदुभाषण से सबको आकर्षित करना, प्रभावित कर लेना बहुत बड़ा गुण है। अपने इन्हीं गुणों से वे सर्वप्रिय हैं। वे स्वस्थ, दीर्घ जीवन प्राप्त करके आर्य समाज के सिद्धान्तों को आगे बढ़ाते रहें यह प्रभु से प्रार्थना है।

-सुधा चौधरी
पूर्व प्राचार्या, आर्य कन्या महाविद्यालय, हरदोई

***

कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य को समर्पित आर्य लोक वार्ता नवम्बर दिसम्बर अंक प्राप्त हुआ। आनन्द आर्य-अमृत वेला के सुअवसर पर महान कर्मयोगी का सम्मान सर्वथा आनन्द का विषय है। आपके सौजन्य से मुझे कर्मयोगी विषयक अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्राप्त हुआ था जिसमें उनके अतुलनीय कृतित्व और व्यक्तित्व का तात्विक शब्दांकन आपके कर्मठ सम्पादन दायित्व का सफल निर्वहन अवलोकनीय है। इस पत्र में आर्य समाज टाण्डा की शताब्दोत्तर रजत जयन्ती महोत्सव की जीवन्त प्रस्तुति पुण्य प्रदय

के रूप में स्तुत्य है। सम्भवामि युगे युगे सम्पादकीय के माध्यम से मनीषी मिश्री लाल आर्य तथा उनके सुपुत्र आनन्द आर्य की समाज के प्रति अप्रतिम निष्ठा सेवाभाव का दिग्दर्शन कराया गया है। आपकी धन्य लेखनी को नमन। आनन्द कुमार आर्य के द्वारा आत्मजीवन प्रसंग सुप्रेरक एवं सन्मार्ग दर्शक लगा। कर्मयोगी के सद्गुणों को व्याख्यायित करते पं.ज्वलंत कुमार शास्त्री, आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, भूपेन्द्र नाथ मेहरोत्रा, डॉ.सोमदेव शास्त्री, सबकदर आलम, सत्यप्रकाश आर्य आदि मनीषियों के शब्दचित्रों ने मन मोह लिया, साथ ही समारोह की छाया चित्रावली हृदयांकित हो गयी। काव्यायन में डा.शितिकण्ठ, दयानन्द जड़िया अबोध, आभा मिश्रा, रमा तथा हर्ष की आनन्दांजलि सराहनीय है। पत्र द्वारा कर्मयोगी का यह सारस्वत सम्मान आर्य जगत का प्रेरणास्रोत बनेगा, यह विश्वास है।

है 'विनम्र' शुभकामना, हों शतायु 'आनन्द'।
आर्य-जगत को प्रेम से, बांटें परमानन्द।
आनन्दित 'आनन्द' हों, शुभ हों सेवाकार्य।
दयानन्द के स्वप्नसम, देश बनाएं आर्य।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
117, आदिलनगर, विकास नगर, लखनऊ-22

***

आर्य लोक वार्ता का नवम्बर दिसम्बर अंक पूर्णतः रंगीन देखकर मन प्रसन्न हो गया। आर्य समाज को तन मन से समर्पित आनन्द कुमार आर्य के लोक हितकारी कार्यों की जानकारी मिली। शिक्षा की अलख जगाने वाले श्री मिश्रीलाल आर्य द्वारा दिए गए दायित्वों को उन्होंने बड़े सुन्दर ढंग से संभाला है जिससे जन सामान्य लाभान्वित हो रहा है। आपने सम्पादकीय के माध्यम से कर्मयोगी को समुचित सम्मान दिया है। अन्य अनेक विद्वानों ने भी आर्य जी के योगदान पर प्रकाश डाला है। काव्यायन में डॉ.उमाशंकर शुक्ल शितिकण्ठ, अबोध, गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', आभा मिश्रा, रामा आर्य 'रमा' तथा 'हर्ष' की कविताएँ भावपूर्ण लगीं। डॉ.मिर्जा हसंन नासिर के असमय देहावसान से हार्दिक दुःख हुआ। इस अंक में उनकी सुन्दर कविता 'बेटियाँ' देकर आपने अच्छा किया। यह कविता मेरे लिए धरोहर रहेगी। उनकी आत्मा को ईश्वर शांति प्रदान करे। नए वर्ष में आप सहित सभी रचनाकारों को शुभकामनाएं।

-सविता वाणी
गौरीगंज, अमेठी (उ.प्र.)

***

'आर्य लोक वार्ता' का सितम्बर अक्टूबर २०१६ अंक प्राप्त हुआ। 'काव्यायन' में सदैव की भांति ऊपरी भाग के मध्य में डॉ.मिर्जा हसन नासिर की सचित्र प्रकाशित गजल पढ़ी अच्छी लगी, परन्तु खेद है कि आगामी अंकों में अब हम उनकी सद्यः सृजित रचना न पढ़ सकेंगे, क्योंकि वह १५ अक्टूबर को अपना पंचतत्व निर्मित शरीर त्याग अनन्त में समाहित हो गये। इस बार भी मुख पृष्ठ का लेख 'राष्ट्र रक्षार्थ आततायी का दमन पुण्य कार्य है' लेखक पं.चमूपति अच्छा ज्ञानवर्द्धक तथा सामयिक है। सम्पादकीय जो हिन्दी आन्दोलन से संबन्धित है अच्छा व ज्ञानवर्द्धक है। डॉ. सत्यकाम आर्य का वेद प्रवचन भी

पठनीय है। काव्यायन की रचनायें भी विविध भावों का रसास्वादन कराती हैं। कुल मिलाकर अंक अच्छा व पठनीय है।

आर्य लोक वार्ता का नवम्बर दिसम्बर संयुक्तांक कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य अभिनन्दन ग्रंथ का ही प्रतिरूप है। जहाँ आनन्द कुमार होंगे वहाँ आनन्द की अनुभूति होना तो स्वाभाविक है ही, और फिर जब आनन्द कुमार के पिता 'मिश्रीलाल' हों तो वहाँ आनन्द के साथ मिठास का कहना ही क्या। अभिनन्दन ग्रंथ की कवितायें तथा उससे संबन्धित रचनायें व उनके सारतत्व इस अंक में प्रकाशित कर बड़ा ही अच्छ कार्य किया गया है कि जिन लोगों के हाथों में अभिनन्दन ग्रंथ नहीं पहुंच पायेगा वे भी इससे लाभान्वित हो सकेंगे। समाज सेवियों पर ऐसे अभिनन्दन ग्रंथ तो प्रकाशित होने ही चाहिये, यही तो उनकी जनसेवा का सच्चा प्रतिफल है। इसके लिए सम्पादक को बहुत बहुत साधुवाद।

-दयानन्द जड़िया 'अबोध'
370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

***

मेरे सामने आर्य लोक वार्ता का नवम्बर दिसम्बर अंक है। मैं चाहकर भी अस्वस्थता के कारण टाण्डा नहीं जा सका।

(१) मेरे प्रिय पिताजी बाबू मिश्रीलाल जी को भलीभांति जानते थे। वह जब अपनी भतीजी के विवाह के सम्बन्ध में सीतापुर आए तब मेरे घर आना नहीं भूले। उनकी भतीजी का विवाह आप जानते ही हैं होली चौराहे पर 'बड़े गुप्ता दवाई वालों' के यहां हुआ था। बारात में प्रो.सुरेन्द शुक्ला भी टाण्डा गए थे उनका वहां धनुर्विद्या प्रदर्शन भी हुआ था।

(२) आनन्द जी से मेरी अन्तिम भेंट टंकारा में सार्वदेशिक से सम्बन्ध में हुई। उनके साथ विनय आर्य, प्रकाश आर्य इन्दौर आदि भी थे। पारिवारिक चर्चा भी हुई। आनन्द जी एक कर्मठ कर्मयोगी और दयानन्द के कट्टर भक्तों में मेरी तरह हैं।

(३) दिसम्बर का आनन्द कुमार आर्य विशेषांक पूरा अंक चाट गया। आपका प्रयास अत्यंत सफल रहा वह भी विषम पारिवारिक परिस्थित में।

(४) चूंकि मेरे पास आनन्द बाबू का पता नहीं है मेरी शुभकामनाएँ उन तक पहुँचा दें। वह मेरे छोटे भाई हैं उनका जन्म १९३६ में हुआ और मेरा १९३३ में। दोनों ऋषिभक्त परिवार में उत्पन्न हुए।

पारिवारिक समाचारों से अवगत हुआ। प्रभु को कोटिशः धन्यवाद है कि हमारी बहूजी 'सरला' का सफल ऑपरेशन हो गया और वह स्वास्थ्य लाभ कर रही हैं। प्रभु उन्हें शीघ्र पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करे ताकि वह वेद प्रचार के कार्य आर्य लोक वार्ता को आगे बढ़ाती रहें।

-वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी'
150, नई बस्ती, सीतापुर

***

आदरणीय डॉक्टर साहब को सादर

प्रणाम। सर्वप्रथम आपको अभिनन्दन ग्रंथ के उत्तम प्रकाशन के लिए बहुत बहुत बधाई। आप सर्दव इसी प्रकार पुस्तकों का प्रकाशन अपने सम्पादकत्व में कराते रहें। हमारी समस्त शुभकामनाएं आपके साथ हैं। इधर आर्य लोक वार्ता पत्रिका नियमित नहीं आ रही है। यदि आती भी है तो दूसरे लोगों के यहां चली जाती है जिससे नियमित उपलब्धता नहीं हो रही है। कृपया जानकारी दें।

-वीना वर्मा, पूर्व प्रधानाचार्या
आवास विकास कालोनी, अमानीगंज, फैजाबाद

***

कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य के ८०वें जन्म दिवस पर समर्पित अभिनन्दन ग्रंथ मुझे प्राप्त हुआ। डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक का सम्पादकीय हृदयस्पर्शी लगा। पाँच पर्वों में संजोये पुस्तक ग्रन्थ की छपाई इति सुन्दर लगी, मुख्यपृष्ठ आकर्षक है। २४ विद्वानों, महापुरुषों के सन्देश प्राप्त कर मुद्रित करने में अथक प्रयास किया गया है। काव्यामृतम् पक्ष भी प्रबल है, विद्वानों के लेख सारगर्भित हैं। छायाचित्र साफ छपे हैं।

आर्य समाज तथा अन्य जनों के लिए ग्रन्थ संग्रहणीय है। स्कूलों-विद्यालय, सामाजिक पुस्तकालयों के लिए यह ग्रन्थ उपयोगी रहेगा।

-राजेश प्रकाश शर्मा 'आनेय'
18ब, अवधपुरी, सर्वोदयनगर, इन्दिरा नगर, लखनऊ

***

कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य अभिनन्दन ग्रन्थ पढ़कर मुझे प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। देश के शैक्षिक वातावरण को सुधारने में संलग्न एक महामानव की उज्ज्वल गाथा को हमारे सामने प्रस्तुत करता है। सम्पूर्ण ग्रंथ का अवलोकन करने पर एक भी अशुद्धि कहीं नजर नही आती है। इस ग्रंथ के सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य जो हिन्दी साहित्य के एक अधिकारी प्रसिद्ध विद्वान हैं। पदे पदे उनकी योग्यता, विद्वत्ता, लेखन शैली के दर्शन इस ग्रंथ में होते हैं। आनन्द बाबू की जीवन-यात्रा इति वृत्त न होकर साहित्यिक महत्व की वस्तु बन गई है। सम्पादकीय अग्रलेख बेजोड़ है। लेखक की भाशा शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह ग्रंथ सभी के लिए प्रेरणाप्रद है, शिक्षक, शिक्षार्थी, व्यवस्थापक सभी को एक बार अवश्य ही पढ़ना चाहिए।

-डॉ.(श्रीमती) कमलेश पाण्डेय
असि.प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, ग्रामोदय पी.जी. कॉलेज, वीरसिंह सरैया, अकबरपुर (उ.प्र.)

***

नववर्ष पर शुभकामनाएँ

'आर्य लोक वार्ता' के समस्त हितैषियों स्वाध्यायप्रेमियों को लोकप्रचलित नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ देते हुए अनुरोध है कि अपनी सहयोग राशि यथाशीर्ष उपलब्ध करा दें। वर्ष २०१६ में जिन्होंने कोई योगदान नहीं किया है, वे भी अविलम्ब अपना सहयोग उपलब्ध करा दें जिससे 'आर्य लोक वार्ता' अबाध गति से आपके पास पहुँचता रहे।-सं.

www.thearyasamaj.org

धारावाहिक-(68)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

(ङ) सत्संगी को मक्षिकावृत्ति का नहीं, मधुप-वृत्ति का अवलम्बन करना चाहिये। 'मधुकर सरिस सन्त गुनग्राही'-तुलसी। उसे सिद्ध-प्रसिद्ध व्यक्ति के दुर्गुणों को नहीं, उसके सद्गुणों को ही अपनाना चाहिये। मनुष्य यदि इस प्रकार का दृष्टिकोण बना ले तो वह अपने संगी साथियों की विशेषताओं का पूर्ण लाभ उठा सकता है। मक्षिकावृत्ति से तो उसे बड़े से बड़े आदमी, अच्छे-से-अच्छे ग्रन्थ में भी दोष ही मिलेंगे।

(च) दुष्ट मित्रों से ही नहीं, दुश्शील स्वजनों से, दुष्ट पशुओं से, विकारोत्पादक वस्तुओं के व्यसन और दूषित वातावरण से भी दूर ही रहना चाहिये, क्योंकि इनसे प्रकृति विकृत हो जाती है। जंगली पशुओं के बीच में रहने वाला मनुष्य जंगली ही हो जाता है। इसी प्रकार पास में विकारोत्पादक वस्तु रहने से चित्त में किस प्रकार दुर्वासना बढ़ती है, इसका दृष्टान्त ऊपर धेन्वास्य की कथा से स्पष्ट है। दूषित वातावरण से मन गन्दा हो जाता है, इसे सभी मानते हैं।

स्थानाभाव से अधिक न लिखकर अन्त में हम यही कहेंगे कि आत्मोन्नति के लिए प्रत्येक व्यक्ति को, जिस प्रकार भी हो, नित्य सत्संग करना चाहिये। जिन महापुरुषों का सत्संग सदा-सर्वदा सुलभ नहीं है, उनसे क्षण भर के लिए मिलने से अथवा उनके दर्शनमात्र से भी निश्चय ही कल्याण हो सकता है।

धन्य कौन है?

१-धन्यवाद की धूम

आजकल धन्यवाद बहुत सस्ता और हवा की भाँति सर्वसुलभ हो गया है। किसी को एक सिगरेट या एक प्याला चाय पीने को दे दीजिए, वह धन्यवादों की झड़ी लगा देगा। कुछ भी न देकर किसी को केवल मिथ्यावचन देने से, अर्थात् झूठा वादा करने से, भी आप तत्काल उसका धन्यवाद पा सकते हैं। जिसके पास कुछ भी नहीं है, वह भी धन्यवाद का धनी है। आधुनिक सभ्यता यही है कि छोटी-छोटी बात के लिए भी धन्यवाद देते रहो। उससे किसी का गौरव बढ़े या न बढ़े, किन्तु अपनी सभ्यता का विज्ञापन होता है और बिना पैसे के काम निकलता है। जिसने धन्यवाद देने की प्रथा चलाई, वह बहुत-से लोगों के धन्यवाद का पात्र है। लोग एक-दूसरे को धन्यवाद देकर बड़े सस्ते में छूट जाते हैं।

प्रश्न यह है कि इस प्रकार के धन्यवाद से क्या सचमुच कोई धन्य हो जाता है? यदि ऐसा हो तो इस समय धूर्तमण्डली में भी शायद ही कोई अधन्य मिले। स्वार्थी, चाटुकार लोग पापमूर्तियों की भी स्तुति करके नित्य कहते हैं- 'धर्मावतार, आप ध न्य हैं।' मूढ़ लोग किसी भाग्यवान् या ध नी अथवा सत्पुरुष के कापुरुष बेटे को भी धन्य कहते हैं। क्या वे वास्तव में धन्य या धन्यवाद के पात्र हैं? धन्यवाद में तो प्रशंसा और प्रतिष्ठा की भावना रहती है। प्रशंसा और प्रतिष्ठा के अधिकारी सब नहीं हो सकते। किसी अयोग्य व्यक्ति को सुयोग्य कहकर आप उसकी योग्यता नहीं बढ़ा सकते। किसी मित्र, स्वजन या कृपापात्र के धन्यवाद मात्र से कोई अधन्य व्यक्ति गौरवान्वित नहीं हो सकता। किसी अनुचित कार्य में किसी असाधु से अनुचित सहायता लेकर आप उसे भले ही साधुवाद दें, परन्तु उससे वह साधु नहीं बन जायगा। तब ऐसे धन्यवाद या साधुवाद का महत्त्व क्या है? उसका महत्त्व उस खिजाब से अधिक नहीं है, जिसको लगाकर बुड्ढे जवान-जैसे लगते हैं।

मुग्ध मन से या केवल मुख से जो धन्यवाद दिया जाता है, उसका विशेष मूल्य नहीं है। उसमें सद्भाव कम और छल अधिक रहता है। उसे हम ढोंग या स्वार्थसिद्धि का मंत्र भी कह सकते हैं। सभ्य समाज में उसकी उपयोगिता इतनी ही है कि वह ऊपरी शिष्टाचार का एक अंग है। ऊपरी ठाठ-बाठ से कहीं किसी को आत्मगौरव मिलता है? उसके धोखे में नहीं रहना चाहिए।

२-धन्यता का रहस्य

धन्यता किसी की मिथ्या स्तुति से नहीं मिलती। क्षणिक प्रतिष्ठा के कारण अपने को धन्य मान लेने से भी वह किसी को नहीं मिलती। बड़ी दौड़धूप और अधिकारियों के पद-पूजन के बाद नौकरी पाने पर किसी के मन में धन्यता की जो अनुभूति होती है, वह एक मिथ्या वासना है। अनुचित रीति से कृतकार्य होकर आप अपने को भले ही धन्य मान लें और आपके साथी लोग भले ही आपको धन्य घोषित कर दें, लेकिन उससे आपको वास्तविक धन्यता नहीं मिलती। 'सौ-सौ जूते खायँ तमाशा घुस के देखें'- इस श्रेणी का व्यक्ति अपने को धन्य मान सकता है और बहुत-से तमाशबीन भी उसे धन्य कह सकते हैं, परन्तु क्या वह सचमुच धन्य है? नीचता से किसी की उच्चता नहीं सिद्ध होती, तब उसे धन्यता का अधिकारी कैसे माना जायगा?

अपने और अपने-जैसे संगी-साथियों के कहने तथा मानने से कोई धन्य नहीं होता। एक विलायती कहावत है, जिसका अर्थ यह है कि प्रत्येक कुम्हार अपने बरतन की, मुख्यतः जब उसमें कोई दोष हो, बड़ी प्रशंसा करता है। मूढ़ लोग उसके धोखे में पड़ सकते हैं। चतुर लोग तो स्वयं परीक्षा करके ही किसी वस्तु को लेते या त्यागते हैं। संसार किसी से कम चतुर नहीं है। वह कठोर परीक्षक है-एक-एक वस्तु को सहस्र नेत्रों से बड़ी सूक्ष्मता के साथ देखता है; एक एक मनुष्य को बहुत ठोक-बजाकर सुपात्र कुपात्र का निर्णय करता है और उसीको गौरव प्रदान करता है, जो उसकी दृष्टि में खरा उतरता है। हमें संसार की दृष्टि से देखना चाहिये। संसार जिसको ध न्य कहे, वास्तव में वही धन्य है।

लोक में धन्य होने के लिए मनुष्य में कुछ विशिष्टता-गुण-चरित्र की असाधारण योग्यता-होनी चाहिये। एक कहावत है- 'चमत्कार के बिना नमस्कार नहीं मिलता' सर्वसाधारण की अपेक्षा जिस व्यक्ति में कोई विलक्षणता होगी, वही तो लोक-दृष्टि में असाधारण एवं सम्माननीय होगा। सामान्य गुण-कर्म से कोई सम्मान्य कैसे होगा? किसीकी महत्ता उसके असामान्य लक्षणों से प्रकट होती है। बुढ़ापे में भी जब कोई युवकों-जैसा उत्साह और पराक्रम प्रकट करता है, तब हम कहते हैं कि वह अद्भुत पुरुष है। तभी हम उसे साधारण व्यक्तियों की अपेक्षा श्रेष्ठ मानते हैं। ऐसे व्यक्ति को लोक हृदय से धन्य कहता है। हमें यह स्वीकार करना चाहिये कि अपनी विशेषताओं के कारण जो प्रशंसित और प्रतिष्ठित होता है, उसीको संसार का हार्दिक धन्यवाद प्राप्त होता है। सत्पुरुषों के समाज में लोक-हृदय से ध्वनित धन्यवाद का ही मान होता है। वही मनुष्य के गौरव का परिचायक है।

('मनुष्य का विराट् रूप' से साभार, क्रमशः)

व्याख्यान माला (25)

अनन्त की खोज

-महात्मा आनन्द गिरि-

देखा आपने कितना निरंकुश और क्रूर है परमात्मा। जो केवल अपनी शक्ति को दिखाने के लिए किसी को भी अकारण इस प्रकार का बना सकता है। अपना हित साधने के लिए तुम्हें उसके फरिश्तों, देवताओं को या उनके भेजे हुए विशेष शक्ति सम्पन्न अवतारों को प्रसन्न करना होगा। उसके भेजे हुए पैगम्बर या महा-पुरुष ही तुम्हारी सारी समस्या सुलझा देंगे। उनकी रक्षा का हाथ अगर सिर पर होगा तो कोई भी कुछ न कर सकेगा। कयामत के दिन यह पैगम्बर महोदय जिस-जिस की सिफारिश करेंगे वह माफ कर दिया जायेगा। जो उनको अपना उद्धारक नहीं मानता उसकी सिफारिश नहीं करेंगे। लिहाजा नरक भोगना होगा। कयामत के दिन यही इन्साफ होगा? किसने क्या-क्या शुभ अशुभ कर्म किये हैं यह खुदा नहीं देखेगा वह केवल सिफारिश के आधार पर दण्ड देगा। अगर उद्धार चाहते हो तो इन पैगम्बर, अवतार अथवा देवताओं में ईमान लाओ बस यही आस्तिकता है। मुझे एक पंक्ति याद आई जो इस बात को बड़े सुन्दर ढंग से स्पष्ट करती है-

अल्लाह के पास वहदत के सिवा क्या है?
जो भी कुछ लेना है वह लेंगे मुहम्मद से।

इस धारणा ने ईश्वरोपासना के स्थान पर कल्पित देवी-देवताओं और व्यक्ति पूजा को पैदा किया। बुनियादी भूल सारी रचना को बिगाड़ देती है। ऐसी ही भावुकता जन्य बुनियादी भूल से मानव समाज को आध्यात्म से भ्रष्ट करके मत- मतान्तर के अन्धकार में भटका दिया। केवल इस भावुक विचार ने कि परमात्मा को सर्वव्यापक मानने से उसकी पवित्रता और गरिमा में आघात पहुँचेगा भक्तों को विभिन्न क्लिष्ट कल्पना की प्रेरणा दी। मेरे मित्रों कठ उपनिषद् में आचार्य यम ने इस शंका का बड़ा सुन्दर समाधान किया है-

सूर्यो यथा सर्व लोकस्य चक्षु-
र्न लिप्यते चाक्षुषैबह्यिदौषेः।
एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा
न लिप्यते लोक दुःखेन वाह्यः।।

एक ही सूर्य सब लोकों को प्रकाशित करता है। प्राणिमात्र के नेत्र उसके प्रकाश से ही देखते और कर्म करते हैं। लोगों की आँखों से होने वाले बाहर के दोषों से प्रकाश लिप्त नहीं होता। उसी प्रकार सर्वान्तरयामी होने पर भी वह लोक के दुःखों से लिप्त नहीं होता। परमात्मा सूक्ष्मातिसूक्ष्म होने के कारण पार्थिव प्रभाव से मुक्त है। अभौतिक होने से प्रकृति के प्रभाव उस तक नहीं पहुँच पाते। सौर ऊर्जा की भी ऊर्जा है, प्रकाश का भी प्रकाश है वह वाह्य गन्दगी से कैसे लिप्त हो सकता है। यथार्थ ज्ञान के अभाव में ही अवैज्ञानिक धारणाएँ जन्म लेती हैं। अपौरुषेय वेद ज्ञान के प्रकाश में यह सब मिथ्या अन्धकार ठहर नहीं सकता। अतः सत्य ज्ञान के लिए भगवती श्रुति की शरण ग्रहण करो। वेद कहते हैं कि वह परमात्मा- ''अरण्यो निहितः जातवेदः''-जिस प्रकार काष्ठ में अग्नि व्यापक है वैसे ही परमात्मा प्रकृति में व्यापक है। व्यापकता से ही वह जड़ प्रकृति को गति प्रदान करता है और सर्वदा नियम में बाँधे रखता है। अग्नि के रूपक से उपनिषद् ने सर्व व्यापकत्व की व्याख्या की है- ''अग्निर्यथैकी भुवनं प्रविष्टो''- जिस प्रकार से एक अग्नि तत्व समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त है वैसे ही एक परम तत्व सर्वव्यापक है। उसकी सर्वव्यापकता ही सर्वज्ञता और सर्व शक्तिमत्ता है।

कार्य को देखकर कर्त्ता का बोध होता है। श्रुति कहती है- 'विष्णु कर्माणि पश्यतः' विष्णु अर्थात व्यापक परमात्मा को जानने के लिए उसके पराक्रम को देखो उसके कर्मों को देखो। इस सृष्टि रूप कर्म को देखने से इसके रचयिता का बोध हो जायेगा। देखा है आपने इस ब्रह्माण्ड के अनन्त विस्तार को? हमारे सूर्य जैसे करोड़ों सूर्य और सौर मण्डल इस ब्रह्माण्ड में हैं। आइन्सटीन ब्रह्माण्ड की दुर्भेद्यता और अनन्त विराटत्व को देखकर अभिभूत हो गये थे। उसने कहा विज्ञान को प्रत्येक राजपथ, मान्यताओं की सब पगडण्डियाँ, अन्ततोगत्वा प्रकृति के रहस्यात्मक अवगुन्ठन से आवृत्त हैं। एक रहस्य के हटने पर सहस्रों रहस्य उपस्थित हो जाते हैं। चूँकि विश्व ब्रह्माण्ड की रचना जिस पदार्थ राशि से हुई है मानव मस्तिष्क भी उसकी से निर्मित है अतः मानव बुद्धि कभी भी प्रकृति के आन्तरिक रहस्य का अनावरण न कर सकेगी। हम जब कभी विश्व ब्रह्माण्ड की अनन्तता से सम्पृक्त होते हैं तो यह शरीर कारागृह के समान लगने लगता है। इच्छा होती है कि दिग्काल की सीमाओं को लांघकर विराट के विस्तार में अबाध उड़ते चले जांय। इस अनुभव की तीव्रता में पार्थिव इच्छाएँ और वैयक्तिता का अहसास समाप्त हो जाता है। यह आध्यात्मिक अनुभव आवश्यक नहीं केवल सन्तों के जीवन तक ही सीमित हो अपितु विज्ञान व गणित के सूत्र जब बौद्धिक चेतना को दिगन्त से परे धकेल देते हैं तो वैज्ञानिक भी इस आध्यात्म को अनुभव करते हैं। अनन्त विध कर्म करने वाले और विश्व ब्रह्माण्ड के निमित्त कारण को एक देशी मानना बड़ी भौंडी बात है। यह दृश्यमान जगत सीमा से रहित अव्याख्येय है। इसका रचने वाला ससीम है और एक स्थान पर बैठा है यह कल्पना ही अपने आप में असंगत है। अतः वेद में कहा गया है कि वह परमात्मा 'परिअगान' है, सर्वत्र है, सर्व व्यापक है।

जो सर्व व्यापक होगा वह साकार कैसे हो सकता है। साकार का अर्थ है जो दिग्कालावेष्टित है। किन्तु जिसने दिग्काल को अपने मं ही आवेष्ठित किया हुआ है वह साकार कैसे हो सकता है। परमात्मा के साकारत्व का वेद सर्वथा निषेध करते हैं- 'न तस्य प्रतिमा अस्ति' उसका कोई प्रतिमान नहीं है। कोई उसको नापतोल नहीं सकता है वह अनुपमेय है, अद्वितीय है कोई उसके समान नहीं है और न कोई उससे अधिक है- 'न तस्य कार्य कारणं चविद्यते' -न तो उस परमात्मा का शरीर है न उसके अन्तः करण और इन्द्रियाँ हैं। न तो कोई उसके समान है और न कोई उससे बढ़कर है। सच्चिदानन्द सर्व व्यापक को एक देशी मानना पाप के अतिरिक्त अपराध भी है। मुझे एक घटना याद आयी।

मैं रेलगाड़ी में सफर कर रहा था। मेरी सीट के सामने वाली सीट पर चार पांच वैष्णव मूर्तियां (साधु) बैठी थीं। कुछ उनमें से नागा साधु भी थे। गांजे की दम चल रही थी, दो-तीन साधु कीर्तन में जुटे थे। रास्ते में टिकट चेक करने वाला बाबू आया। सबने अपने अपने टिकट दिखा दिये। सबके टिकट देख चुकने के पश्चात उसने सीट के ऊपर सामान रखने वाली बर्थ पर पेन्सिल से खट-खट किया और 'श्रीमान् जी आप दोनों का

टिकट....' कहकर उसने फिर खट-खट किया। मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रही क्योंकि ऊपर सीट पर कोई भी न था। आखिर यह किससे टिकट मांग रहा है। मैंने यह जानने का प्रयत्न किया कि टी.टी.आई. ने मेरी ओर देखकर पूछा 'क्या यह दो सवारी आपके साथ है?' 'कौन सवारी' मैंने जानना चाहा। उसने बर्थ पर पीतल के सिंहासन की ओर इशारा किया जिसमें 'सीताराम' की जोड़ी रखी थी। मैंने कहा 'नहीं जी यह मेरी सवारी नहीं है।' इतने में एक वैष्णव का ध्यान ऊपर गया उसने कहा 'अरे-रे-रे...छू मत देना ठाकुर जी हैं'। टी.टी.आई. ने कहा-'यह आपके साथ है?' बाबा बोला-'हाँ हमारे ठाकुर जी हैं।' टी.टी. ने कहा 'इन दोनों का टिकट दिखाओ।' 'इनके टिकट?' आश्चर्य से बाबा की गाँजे से लाल-लाल आँखें फैल गईं। 'हाँ, महाराज इनके टिकट दिखाओ।' बाबू ने रोबदार आवाज में कहा। बाबा बोले-'इनका टिकट थोड़े ही लगता है। आज तक किसी ने भी इनका टिकट नहीं मांगा है।' बाबू ने कहा-'बाबा यह कोई बिस्तर बन्द या बाक्स या सूटकेस है जो इनका टिकट न लगेगा।' 'इनका टिकट क्यों लगेगा?' बाबा ने पूंछा। 'देखो, प्राण-प्रतिष्ठा किये हो, यह खाते-पीते हैं, सोते-जागते हैं, सुनते-चेतते हैं, चेतन हैं, प्राण वाले हैं, सो रेल का कानून है कि जीवित प्रणी का किराया लगता है। लिहाजा २०रु. दण्ड और १३-१३ रुपये किराया कुल ४६ रुपये निकालो।' बाबा की हालत बिगड़ गई। उनके मुख से निकल पड़ा कि 'इतने के तो ठाकुर ही नहीं हैं। (मधुर हास्य स्वर) न तो यह कहते बने कि यह ठाकुर जी जड़ हैं और न यह कहते बने कि प्राणवान हैं। सारे लोग ठहाका मार कर हँस पड़े। बाबू भी शगूफा छोड़कर चल दिया। कैसी विचित्र कल्पना है। हम जानते हैं कि मूर्ति जड़ है, निष्क्रिय है फिर भी अज्ञान वश उसे चेतन समझ कर अन्धविश्वास के साथ पूजते रहते हैं। इस भावुकता को जब बुद्धिवादी अनर्गल तर्क से पुष्ट करने का प्रयत्न करता है तब स्थिति बड़ी हास्यापद हो जाती है। जड़ पूजा के समर्थन में कहा जाता है कि-

'न काष्ठे विद्यते देवो न पाषाणे न मृण्मये भावे हिविद्यते देवस्तस्याद भावो हि कारणम्।' कहा जाता है कि देवता न तो काष्ठ में हैं न पत्थर और न मिट्टी में। देवता तो भाव में स्थित है। इसलिए भाव ही परम कारण है। मूर्ति में देवता का भाव कर लेते हैं। मानों तो देव है न मानो तो पत्थर। स्वामी दयानन्द महाराज ने इस भावुकता का बड़ा तर्कपूर्ण खण्डन किया है। स्वामी दयानन्द का तर्क देने से पूर्व मैं स्वामी शंकराचार्य के अध्यास की बात कहना ठीक समझता हूं। अध्यास, जो अज्ञान है उसका अर्थ है वस्तु में अवस्तु का आरोपण करना जैसे रज्जू में सर्प का आरोपण करना, मूर्ति में जो देवता नहीं है उसमें देवत्व का आरोपण करना अध्यास है। *(क्रमशः)*

www.thearyasamaj.org

काव्यायन

अंधकार के क्षण जल जाते

❑महेश चंद्र द्विवेदी
पूर्व डी.जी.पी.

राम अगर तुम फिर आ जाते
जन-जन मन से कलुष मिटाते
घर-घर प्रेम के दीपक जलते
अंधकार के क्षण जल जाते

लक्ष्मण सम लघुभ्राता होते
पत्नी होती ज्यूँ सीता माते
हनुमान सम सखा हम बनते
सबमें निष्ठा की अलख जगाते

भरत सम भ्राता हर-घर होते
स्वार्थ से हम ऊपर उठ जाते
बनाकर खड़ाऊँ को तव-प्रतीक
राम-राज्य फिर पृथ्वी पर लाते

आतंकी दानव सिर न उठाता
दिग्भ्रमित, जिहादी बन न पाते
दुर्गुण का तुम दहन जब करते
अंधकार के क्षण जल जाते

-1/137, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ

उतार दीजिये

❑डॉ. कैलाश निगम

राजनीति की भँवर लाँघने में हो समर्थ ऐसी
प्रेम की तरी को पतवार दीजिये।
धर्म और कर्म का महत्व जो भुला दे वह
चिन्तन है पाप उसको बिसार दीजिये।
देश बाँटने का दण्ड देकर तुरन्त उन्हें
अब कुछ रहने नहीं उधार दीजिये।
अस्मिता जो राष्ट्र की मिटाने में लगे हैं ऐसे
खलनायकों को गद्दी से उतार दीजिये।।

–4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

दोहे नोटबंदी के

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

धन्य नोटबंदी हुआ, आहत भ्रष्टाचार।
प्रतिपक्षी रो-रो मरे, झूठे करें प्रचार।।
नव समुद्रमंथन सदृश, नोटबंद अभियान।
मदिरा बंटी विपक्ष में, देव करें सम्मान।।
मोदी जी की नीति का, करे विरोध विपक्ष।
दंग हो रहे देखकर, छप्पन इंची वक्ष।।
कितने ही छापे पड़े, जहाँ श्याम-धन ढेर।
बन्द सलाखों में हुए, कई नामवर शेर।।
बहे जा रहे लोग कुछ, बिन वर्षा बिन नाव।
नित पुलाव बंटवायेगा, आया निकट चुनाव।।
वैसे तो प्रतिवर्ष ही, आता है नव वर्ष।
दो हजार सत्रह नवल, देगा स्वर्गिक हर्ष।।
मंगलमय हो सभी को, सुखद आंग्ल नववर्ष।
तन-मन-धन निर्मल रहे, प्रतिपल दे उत्कर्ष।।

–117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

एक दृष्टि : दो मुक्तक

❑उमेश 'राही'

पहली बार मैंने जिन्दगी को मजबूर देखा,
तुम्हारी माँग पर लगा गैर का सिन्दूर देखा।
एहसास की नदी सूखकर सब रेतीली हुई-
अपनी जिन्दगी से तुमको जाते हुए दूर देखा।।

परहेज जिसको नशे से, उन आँखों में सुरूर देखा,
जो सर झुकाए चलता था, उसे मगरूर देखा।
गमों की आँधियों में मेरा नाम मिटता गया-
खुशी के गाँव में मैंने उसे होते मशहूर देखा।।

–ई-203, राजहंस अपार्टमेंट, इन्द्रापुरम, गाजियाबाद

बेमेल

❑नरेन्द्र भूषण

बात निकली हो दिल से वही गीत है।
चल रही लू तो कैसे कहें शीत है।

लोग हीरा को कहने लगे काँच हैं
ये भी कहने लगे साँच को आँच है
आज बेमेल कहलाया अनमोल जो
आकलन, स्वार्थवश या हो भयभीत है।

दिन को दिन, रात को रात जिसने कहा
वो निशाने पे हरदम सभी के रहा
कोई समरथ कहे तो गलत भी सही
जाने कैसी चली ये नयी रीत है।

जो है मुजरिम दिखा मुस्कुराते हुए
और निर्दोष जो सिर झुकाते हुए
न्याय, अन्याय का फैसला वे करें
जिनकी अपराधियों से घनी प्रीत है।

जो है सच्चा दिखेगा अकेला खड़ा
कहते सब, नीम पर वो करेला चढ़ा
झूठ, छल जो करे, हो रहा है सफल
कह रहे सब इसे सत्य की जीत है।

आस्तीनों में अब साँप पलने लगे
होम करते हुए हाथ जलने लगे
शत्रु ओढ़े मिलें आवरण मित्र का
फिर भी 'भूषण' सभी को कहे मीत है।

–अध्यक्ष, 'सुन्दरम्' साहित्यिक संस्था, लखनऊ

जनता का राज है

❑राजाराम त्रिपाठी 'करुणेश'

गाय और सिंह एक घाट पर ही पानी पियें
पढ़ इतिहास की कहानियों को नाज है।
खूनी की पिपासा लिये भाई की ही भाई अब
ऐसा ताना-बाना लिये आज का समाज है।

मानवीय संस्कृति ढूंढे न जहान में है
छद्म असुराइयों के सर बंधा ताज है।
भ्रष्टाचार लोभ मोह.द्रोह के बयाने बढ़े
मित्रता की बुनियाद थामे दगाबाज है।।

–ग्राम व पोस्ट अतरौली,, हरदोई

हर्ष-चतुष्पदी

आदत नहीं है!

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

सहर्ष रोज जीता हूँ वजह
मरने की फुर्सत नहीं है,
वहीं रोज मरता है कोई
जिसे जीने की चाहत नहीं है।
पीएम मोदी को पता कर देखना होगा
जिन्हें दो जून रोटी की नौबत नहीं है।
पुराने गये अब नये नोट आये
हमें नोट करने की आदत नहीं है।

–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी काव्य

मौत से ठन गयी!

(युवावस्था में)

❑अटल बिहारी वाजपेयी
पूर्व प्रधान मंत्री

ठन गयी!
मौत से ठन गयी!
जूझने का मेरा कोई इरादा न था,
मोड़ पर मिलेंगे इसका वादा न था;
रास्ता रोक कर वह खड़ी हो गयी,
यों लगा ज़िन्दगी से बड़ी हो गयी;
मौत की उम्र क्या? दो पल भी नहीं,
ज़िन्दगी–सिलसिला, आजकल की नहीं;
मैं जी भर जिया, मैं मन से मरूँ,
लौट कर आऊँगा, कूच से क्यों डरूँ;
तू दबे पांव, चोरी-छिपे से न आ,
सामने वार कर, फिर मुझे आजमा;
मौत से बेखबर ज़िन्दगी का सफ़र,
शाम हर सुरमई, रात बंसी का स्वर;
बात ऐसी नहीं कि कोई ग़म ही नहीं,
दर्द अपने-पराये कुछ कम भी नहीं;
प्यार इतना परायों से मुझ को मिला,
न अपनों से रहा कोई बाकी गिला;
हर चुनौती से दो-हाथ मैंने किये,
आंधियों में जलाये हैं बुझते दिये;
आज झकझोरता तेज तूफान है,
नाव भँवरों की बाहों में मेहमान है;
पार पाने का कायम मगर हौसला,
देख तूफ़ां का तेवर तरी तन गयी;
मौत से ठन गयी!

अटल बिहारी वाजपेयी

नवम्बर 1988 में अमेरिका में घुटनों के इलाज के दौरान अस्पताल में लिखित कविता।
-'दैनिक जागरण' से साभार

गणतंत्र-दिवस

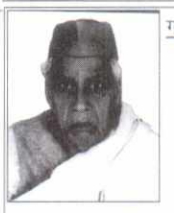

ध्वज लहराइये

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

भारत स्वतंत्र का है, मूल मंत्र गणतंत्र,
प्रीति-गीति रीति साथ, नीति बतलायेंगे।
शान्ति सद्भावना का, कर बढ़ा सब ओर
स्नेह-मेह गेह-गेह सदा बरसायेंगे।।
करके विकास ऋद्धि, सिद्धि व समृद्धि बढ़ा,
व्योम-वीथिका के बीच, ध्वज फहरायेंगे।
आन बान शान सदा, राष्ट्रगान मान साथ,
प्रेम से 'अबोध' संग, सबके ही गायेंगे।।

धार गणतंत्र हेतु, मंत्र स्नेह शान्ति युक्त,
सुख-समृद्धि, सूर्य को स्वदेश में उगाइये।
द्वेष-दुःख दैन्य उग्रवाद की घटा मलीन,
एकता के भाव से सदैव विनसाइये।।
आज बान शान हेतु, प्राण बलिदान कर,
श्रम से उपज द्विगुणित उपजाइये,
धर्म-कर्म मर्म साथ, देश-भक्ति के न भूल,
आज राष्ट्र ध्वज को 'अबोध' लहराइये।।

-'चन्द्रा मण्डप', 370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ-03 (संगमलाल वीथिका)

स्वप्न 'सुराज' के टूट रहे हैं!

❑उमाशंकर शुक्ल 'शितिकंठ'

अँगरेज गए, जमींदार गये,
रँगरेज नये अब लूट रहे हैं।
निज सम्पत्ति भेज विदेश की बैंक
निशंक सुधा-घट घूँट रहे हैं।
अपनों से नहीं अपनत्व रहा,
बना कंचनी सौध त्रिकूट रहे हैं।
अनियंत्रित आज स्वराज्य हुआ
सब स्वप्न 'सुराज' के टूट रहे हैं।।

–538क/88, त्रिवेणी नगर प्रथम, डालीगंज रेलवे क्रॉसिंग, सीतापुर रोड, लखनऊ

www.thearyasamaj.org

लखनऊ-समाचार

आर्य समाज आदर्श नगर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज आदर्शनगर का वार्षिक उत्सव ६ से १२ फरवरी २०१७ तक समारोह पूर्वक मनाया जायगा। वेद प्रवचन कर्ता श्री योगेन्द्र याज्ञिक (होशंगाबाद, म.प्र.) तथा भजनोपदेशक श्री योगेश दत्त जी (बिजनौर) पधार रहे हैं।

श्री सतीश निझावन, मंत्री आर्य समाज सूचित करते हैं कि अन्तिम दिन १२ फरवरी को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज का १९३वाँ जन्म दिवस मनाया जायगा तथा ऋषि लगंर (प्रीतिभोज) भी उसी दिन मध्यान्ह में आयोजित होगा। श्री आत्मप्रकाश बत्रा, प्रधान आर्य समाज ने आर्य जनता से उत्सव में पधार कर सफल बनाने का अनुरोध किया है। नित्य प्रातः ७ बजे से ११ बजे तक तथा सायं ६ बजे से १० बजे तक यज्ञ एवं प्रवचन, भजनोपदेश के माध्यम से वेद प्रचार होता रहेगा।

आर्य समाज इन्दिरा नगर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज इन्दिरानगर का ३८वाँ वार्षिकोत्सव १८ से २० नवम्बर २०१६ तक समारोह पूर्वक मनाया गया। उत्सव में डॉ.ज्योत्सना द्विवेदी (म.प्र.), भीष्म आर्य (बिजनौर), रामकृष्ण आचार्य (हरिद्वार) तथा डॉ.(श्रीमती) निष्ठा विद्यालंकार ने अपने प्रवचनों एवं भजनोपदेशों द्वारा जनता को लाभान्वित किया। यज्ञ के ब्रह्मा थे श्री अमृत मुनि वानप्रस्थी। *(डोरीलाल आर्य)*

श्रीमती चित्रा जौहरी दिवंगत

आर्य समाज आदर्शनगर की सक्रिय सदस्या श्रीमती चित्रा जौहरी धर्मपत्नी श्री सुरेन्द्र प्रताप जौहरी का निधन ०७.१२.१६ को उनके सुजानपुरा आलमबाग आवास पर हो गया। सद्गुण सम्पन्न समाजिक सरोकारों से प्रतिबद्ध स्व.चित्रा जी जनता गर्ल्स कालेज में प्रवक्ता पद से सेवानिवृत्त हुई थीं। ०६.१२.१६ को आपकी पुण्यस्मृति में शान्तियज्ञ का आयोजन हुआ जिसमें आर्य समाज एवं परिवार से जुड़े हुए अनेक व्यक्तियों ने दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। 'आर्य लोक वार्ता' की हार्दिक श्रद्धांजलि!

देवेन्द्र देव पाण्डेय नहीं रहे

वैदिक विद्वान् आचार्य स्व.रामचरित्र पाण्डेय तथा स्व.उषा पाण्डेय के कनिष्ठ पुत्र श्री देवेन्द्रदेव पाण्डेय का सिकन्दराबाद (हैदराबाद) में दिनांक १३.११.१६ को आकस्मिक निधन हो गया। प्रतिभाशाली श्री पाण्डेय एक निजी कम्पनी में क्षेत्रीय प्रबंधक पद पर तैनात थे। दुखद समाचार पाकर पाण्डेय की बड़ी बहन सुश्री सुमन पाण्डेय लखनऊ से वहाँ गईं तथा सिकन्दराबाद में ही उनकी अन्त्येष्टि कर दी गई। पाण्डेय के राजेन्द्र नगर स्थित निवास स्थान पर १६.११.१६ को शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया; जिसमें उनके अग्रज नरेन्द्रदेव पाण्डेय, महेन्द्रदेव पाण्डेय, रश्मि त्रिपाठी, अमित त्रिपाठी, राहुल अवस्थी इत्यादि पारिवारिक जनों ने यज्ञ में आहुति देकर श्रद्धांजलि अर्पित की। स्व.पाण्डेय अपने पीछे पत्नी तथा दो पुत्रियों को छोड़ गये हैं। 'आर्य लोक वार्ता' की हार्दिक श्रद्धांजलि!

शोक समाचार

आर्य समाज शृंगार नगर की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती पद्मा शर्मा के पुत्र श्री संजीव शर्मा (५४ वर्ष) का २७ अक्टूबर २०१६ को दुःखद निधन हो गया। स्थानीय वैदिक विद्वानों द्वारा अन्त्येष्टि एवं शान्तियज्ञ कराया गया। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति और सद्गति प्रदान करे। *(राकेश माहना, मंत्री, आ.स.)*

संगोष्ठी एवं काव्यगोष्ठी

१०.०१.२०१७। विश्व हिन्दी दिवस के सुअवसर पर भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन राष्ट्रीय परिषद शाखा लखनऊ द्वारा संगोष्ठी एवं काव्यगोष्ठी का आयोजन अध्यक्ष श्री महेशचन्द्र द्विवेदी के विवेक खण्ड-१ आवास पर हुआ जिसके मुख्य अतिथि वरिष्ठ व्यंग्यकार डा.गोपाल चतुर्वेदी थे। संरक्षक डॉ.मोहनलाल अग्रवाल ने परिषद की प्रगति तथा भावी कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। हिन्दी को राष्ट्रभाषा तथा विश्व भाषा बनाने के विषय में स्थिति, प्रगति तथा प्रयासों पर डा.विद्या बिन्दु सिंह, गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र', देवकी नन्दन 'शांत', महादेव प्रसाद, वीरेन्द्र कुमार सक्सेना, नीरजा द्विवेदी आदि ने सार्थक विमर्श प्रस्तुत किया। इस बीच परिषद की ओर से श्री मृत्युंजय गुप्ता सम्पादक विश्व विधायक तथा वरिष्ठ साहित्यकार साधु सरन वर्मा 'सरन' को शॉल एवं सम्मान पत्र देकर अभिनन्दित किया गया। तत्पश्चात् अनेक कवियों ने सुललित काव्यपाठ किया। संचालन डा.उषा सिन्हा ने तथा धन्यवाद ज्ञापन महेशचन्द्र द्विवेदी ने किया। *(गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र')*

सुन्दरम् काव्यगोष्ठी

०६.११.२०१६। सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संस्था 'सुन्दरम्' के तत्वावधान में प्रथम रविवासरीय मासिक काव्यगोष्ठी संस्थाध्यक्ष नरेन्द्र भूषण के जानकी पुरम आवास पर हुई जिसके मुख्य अतिथि गीतिकाचार्य ओम प्रकाश मिश्र 'नीरव' तथा विशिष्ट अतिथि अशोक पाण्डेय 'अशोक' एवं डा.दिनेश चन्द्र अवस्थी थे। शुभारम्भ डा.कैलाश निगम की वाणी वन्दना से हुआ। तत्पश्चात जिन प्रमुख कवियों ने काव्यपाठ किया उनमें अनिल श्रीवास्तव, विपिन मलिहाबादी, मंजुल मंगर, विनम्र, राजाभइया गुप्ता 'राजाभ', केसरी प्रसाद शुक्ला, कृष्ण कुमार सिंह, हरिमोहन वाजपेयी माधव, डा.दिनेश अवस्थी, अशोक पाण्डेय, अखिल श्रीवास्तव, शिवनाथ सिंह, वी.सी.राय, रवीन्द्र नाथ तिवारी, ओम नीरव के नाम प्रमुख हैं। कार्यक्रम का संचालन हरिमोहन 'माधव' ने किया तथा अध्यक्ष नरेन्द्र भूषण ने काव्यपूर्ण धन्यवाद ज्ञापन किया। *(गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र')*

सर्वजनहिताय समिति

सर्वजनहिताय साहित्यिक समिति द्वारा स्थानीय सी-५२०१, राजाजीपुरम के प्रांगण में आयोजित मासिक काव्य संध्या में वरिष्ठ छन्दकार महेश प्रसाद पाण्डेय 'महेश' ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि छन्दबद्ध रचना कभी न समाप्त होने वाली विधा है। छन्दबद्धरचना उस वटवृक्ष के समान है जिसके तले छन्दमुक्त रचना उग तो सकती है लेकिन पल्लवित पुष्पित नही हो सकती।

अधिसूचना

यह सूचनार्थ अधिसूचित किया जाता है कि सी.बी.एस.सी. द्वारा जारी मुख्य माध्यमिक परीक्षा वर्ष २०१० एवं अनुक्रमांक ५२६१५६६ उत्तीर्ण करने से सम्बन्धित मेरा मूल प्रमाणपत्र वास्तव में खो गया है। छात्रा का नाम- सौम्या श्रीवास्तव, स्थायी पता-५/१६५, विकास खण्ड, गोमती नगर लखनऊ-२२६०१० चलभाष-९१-९६४०२२८५६६

वैवाहिक-कार्यक्रम

श्री अमृत मुनि (पूर्व नाम रमेश चन्द्र त्रिपाठी) की सुपुत्री दिव्या के विवाह पूर्व संगीत कार्यक्रम २०.११.१६ को सम्पन्न हुआ; जिसमें डॉ.(श्रीमती)निष्ठा विद्यालंकार का संगीतात्मक उद्बोधन हुआ तथा प्रीतिभोज का आयोजन किया गया। पुत्री दिव्य के लिए 'आर्य लोक वार्ता' की हार्दिक शुभकामनाएँ!

वैदिक यज्ञ

१४.१२.१६। श्री सौरभचन्द्र एडवोकेट, २४, वैष्णव विहार, सेक्टर-११, इन्दिरा नगर लखनऊ में वैदिक यज्ञ का आयोजन आचार्य डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। सौरभ की माताजी के स्वास्थ्यलाभ की कामना की गई तथा पुत्र चि.शिवांश को आशीर्वाद दिया गया। कालोनी के कई परिवार यज्ञ में शामिल हुए तथा आचार्य जी के विचारों से लाभान्वित हुए।

आर्य समाज शृंगारनगर

आर्य समाज शृंगार नगर, लखनऊ का वार्षिक निर्वाचन दि.२०.११.१६ को निम्नवत् सम्पन्न हुआ-

श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव	प्रधान
श्री राकेश माहना	मंत्री
श्रीमती आशा मेहता	कोषाध्यक्ष

(राकेश माहना, मंत्री)

शोक समाचार

जाने माने कवि श्री दयानन्द जड़िया 'अबोध' के मझले भ्राता डॉ.गिरीशचन्द्र जड़िया होम्योपैथ का ८८ वर्ष की अवस्था में विगत २६.१२.१६ को निधन हो गया। उनकी अन्त्येष्टि उसी दिन गुल्लाला घाट पर वैदिक रीति से हुई और शान्ति यज्ञ २८.१२.१६ को सम्पन्न हुआ। डा.जड़िया अपने पीछे पुत्र, पुत्री, पुत्रवधू, ३ पौत्र, ३ पौत्री वे दौहित्री से भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं। *(दयानन्द जड़िया)*

रमनलाल अग्रवाल का निधन

साहित्यकार रमनलाल अग्रवाल का ०२.११.१६ बुधवार को आकस्मिक निधन हो गया। उनके निधन पर साहित्य जगत में शोक की लहर दौड़ गई। गुरुवार को दोपहर १२ बजे गुल्लाला घाट पर अंतिम संस्कार सम्पन्न हुआ। वह काफी दिनों से बीमार चल रहे थे और उनका इलाज चल रहा था। बुधवार को उन्होंने अंतिम सांस ली। स्वर्गीय अग्रवाल ने उर्दू व हिन्दी भाषा में अनेक पुस्तके लिखी हैं। साहित्यकारों ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। साहित्य सेवा एवं लोकोपकारी कार्यों के लिए श्री रमनलाल सदैव याद किये जाते रहेंगे। 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह' में उनका सार्थक सहयोग रहता था। चौक क्षेत्र के गुल्लाला शवदाह स्थल को सुव्यवस्थित रूप देने में भी उनका योगदान अविस्मरणीय है।

मेरठ-समाचार

गुरु-शिष्य परम्परा पर आधारित भव्य समारोह

शिक्षाशास्त्री आचार्य विद्यासागर दीक्षित का पुण्य स्मरण

गुरु-शिष्य परम्परा पर आधारित संस्था 'विद्यासागर फाउण्डेशन' मवाना (मेरठ) ने स्वतंत्रता सेनानी एवं शिक्षाविद् आचार्य विद्यासागर दीक्षित का भावपूर्ण स्मरण एवं अभिनन्दन समारोह आयोजित किया। दिनांक ११ नवम्बर २०१६ को महर्षि परशुराम कन्या जू.हा. स्कूल मवाना मेरठ में वैदिक यज्ञ कर्नल पाल प्रमोद, श्रीमती प्रतिभा पाल, पाल प्रवीण, सुरेश आर्य, नरेन्द्र कुमार वरिष्ठ एडवोकेट, सुश्री शक्ति साहनी व विद्यालय की छात्राओं द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विद्यासागर फाउण्डेशन के अध्यक्ष श्री बी.के.शर्मा (पूर्व प्रधानाचार्य ए.एस.इण्टर कालेज मवाना) के सहयोग से शिक्षा तथा समाज सेवा के क्षेत्र समर्पित निष्ठावान महिलाओं व सज्जनों- श्री विजय प्रकाश चतुर्वेदी, देवेन्द्र शर्मा, डा.सुखवीर सिंह(आर्य समाज हस्तिनापुर), करतार सिंह राजपूत, श्रीमती राजेश्वरी गुप्ता मवाना को सम्मानित किया गया। मंचासीन शिक्षाविद डा. शक्ति साहनी मुख्य अतिथि, वरिष्ठ एडवोकेट एवं समाजसेवी श्री नरेन्द्र कुमार रस्तोगी, आर्थोपैडिक सर्जन डा.अजयवीर गर्ग, श्रीमती नीता दुबलिश प्रान्तीय अध्यक्ष भारत विकास परिषद हस्तिनापुर, श्री पाल प्रवीण, कौशल कुमार शर्मा महामंत्री विद्यासागर फाउण्डेशन, कर्नल पाल प्रमोद ने अपने सम्बोधन से महान शिक्षाविद आचार्य विद्यासागद दीक्षित जी के जीवन से सम्बन्धित अपने अपने संस्मरण प्रस्तुत किये तथा उनके विशेष गुणों पर प्रकाश डाला।

आर्य लोक वार्ता के जाने माने हस्ताक्षर श्री पाल प्रवीण ने श्री बी.के.शर्मा को धन्यवाद दिया। वे आचार्य दीक्षित की प्रतिष्ठा में गत १०-१२ वर्षों में भव्य समारोह करते रहे हैं जिसमें मेधावी छात्रों, आदर्श शिक्षकों व समाजसेवियों को सम्मनित करते रहे हैं। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय की प्रधानाचार्या ने किया।

लखनऊ-समाचार

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ द्वारा २३ दिसम्बर २०१६ को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह श्रीमद्दयानन्द बाल सदन, मोती नगर में आयोजित हुआ जिसकी अध्यक्षता श्री अमृत मुनि ने तथा संचालन श्री प्रबोध सागर जौहरी मंत्री जिला सभा ने किया। इस अवसर पर नगर की आर्य समाजों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। प्रमुख वक्ताओं में आचार्य सन्तोष वेदालंकार, आचार्य विश्वव्रत शास्त्री, नवनीत निगम, डा.रूपचन्द्र दीपक थे जिन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द से सम्बन्धित घटनाओं को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में विशेष रूप से स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के जीवन पर बनाई गई डाक्यूमेंट्री फिल्म दिखायी गई। *(पाल प्रवीण)*

मंजरी-नितीश-परिणय

आचार्य आनन्द मनीषी (डा.आनन्द वर्णवाल) प्रधान, आर्य समाज, वेद मंदिर राजाजीपरम की पौत्री आयु.मंजरी का पाणिग्रहण संस्कार श्री नितीश मिश्र के साथ दिनांक ०१.१२.१६ को वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

दिनांक ०४.१२.१६ को आर्य समाज मंदिर में स्वागत-समारोह का सुखद आयोजन हुआ; जिसमें वर-वधू को आशीर्वाद-शुभकामनाएँ समर्पित की गईं। 'आर्य लोक वार्ता' परिवार की इस अवसर पर शत शत मंगल कामनाएँ!

सुमन वृष्टि कर दे रहे, देववृन्द आशीष।
सदा सुखी सानन्द हों, प्रिय मंजरी-नितीश।।

अमृत खरे सेवा निवृत्त

'आर्य लोक वार्ता' के प्रमुख स्तम्भ, प्रख्यात गीतकार, वेदमंत्रों के पद्यानुवादक, साहित्य सेवी, यशस्वी साहित्यकार श्री अमृत खरे, बैंक ऑफ बड़ौदा में दीर्घकाल तक सफलतापूर्वक अपने सेवाएँ देने के पश्चात् ३०.११.२०१६ को सेवा निवृत्त हो गये हैं। यद्यपि अभी आपका थोड़ा कार्यकाल शेष था किन्तु आपने कई मास पूर्व स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति हेतु आवेदन कर रखा था, जिसे दिनांक ३०.११.१६ को स्वीकृति मिली। श्री खरे का बैंक सेवा का कार्यकाल अत्यंत सफल प्रशंसनीय माना गया है।

श्री डोरीलाल आर्य सेवा निवृत्त

आर्य समाज इन्दिरा नगर के प्रधान श्री डोरीलाल आर्य एच.ए.एल. में ३७ वर्ष ३ महीने के सफल सेवाकाल को पूर्ण करके ३०.११.१६ को सेवानिवृत्त हो गये हैं। सफल, सार्थक राष्ट्रसेवा पूर्णता पर श्री आर्य को हार्दिक बधाई। निश्चय ही उनका और भी अधिक समय अब आर्य समाज को मिल सकेगा।

इन्हीं दिनों अलीगढ़ जनपद में श्री डोरीलाल आर्य की पूजनीय माताजी के देहावसान का समाचार भी मिला। माताजी के प्रति शोकसंवेदना एवं श्रद्धांजलि!

महेश प्रसाद पाण्डेय सम्मानित

०७.११.१६। भारतीय भाषा प्रतिष्ठान राष्ट्रीय परिषद (मुम्बई) तथा बिसारिया शिक्षा एवं सेवा समिति लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में स्थानीय राज एकेडमी मेंहदी के सभागार में राष्ट्रीय आध्यात्मिक कवि सम्मेलन में वरिष्ठ छन्दकार महेश प्रसाद पाण्डेय 'महेश' को आध्यात्मिक काव्य भूषण की मानद उपाधि से अलंकृत एवं सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री हृदय नारायण दीक्षित, एम.एल.सी. ने की तथा मुख्य अतिथि थे पूर्व विधायक श्री सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव। संचालन डा.सुरेन्द्र विक्रम ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन धुरेन्द्र स्वरूप बिसारिया 'प्रभंजन' ने किया। इस अवसर पर देश के विभिन्न क्षेत्रों से आये लगभग ८० कवियों ने काव्यपाठ किया जिनकी रचनायें विमोचित एवं वितरित की गयी स्मारिका में संक्षिप्त परिचय सहित प्रकाशित की गयी थीं। *(महेश प्रसाद पाण्डेय 'महेश')*

www.thearyasamaj.org

सन् 2017 के आर्य पर्व - आर्य लोक वार्ता का स्नेहोपहार

लोक प्रचलित नववर्ष-२०१७-स्वागतम्

होता(ऋत्विक्) सदस्यों को विशेष धन्यवाद-बधाई-आभार प्रदर्शन

सन् सत्रह दे आपको- सुख समृद्धि वरदान।
योग-यज्ञ से प्राप्त हो- स्वास्थ्य सिद्धि सम्मान।।

अपने समस्त स्वाध्यायशील एवं हितैषी पाठकों को हार्दिक बधाई है, जिन्होंने अपने उदार सहयोग द्वारा वेद प्रचार एवं राष्ट्रोत्थान में बिना एक भी विज्ञापन के १६ वर्षों से अनवरत संलग्न- 'आर्य लोक वार्ता' को हिन्दी पत्रकारिता के फलक पर गौरवपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित किया है।

आर्य लोक वार्ता को 1500 रु. या इससे अधिक सहयोग प्रदान करने वाले होता (ऋत्विक्) सदस्यों की तालिका- वर्ष 2016

01.01.16 से 31.12.16 तक सहयोग प्राप्ति–तिथि क्रमानुसार

1. आनन्द कुमार आर्य, **कोलकाता** (05.01.16)
2. पाल प्रवीण, वैदिक स्वाध्याय केन्द्र, अलीगंज, **लखनऊ** (05.01.16)
3. अनीता सिंह, प्रिंसिपल, डी.ए.वी.एकेडमी, टाण्डा, **अम्बेडकरनगर** (24.01.16)
4. रुक्मिणी आर्य, प्रधान, माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, **हरिद्वार** (08.02.16)
5. आर्य समाज, आदर्श नगर, आत्मप्रकाश बत्रा **लखनऊ** (21.02.16)
6. प्रमोद कुमारी पी.के. अलीगंज, **लखनऊ** (12.03.16)
7. अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा, **राजस्थान** (15.04.016)
8. विश्वमित्र शास्त्री, आर्य समाज, अलीगंज, **लखनऊ** (01.05.16)
9. प्रियंका शर्मा, जानकीपुरम, **लखनऊ** (09.05.16)
10. जगदीश आर्य, 24 परगना, **प.बंगाल** (09.05.16)
11. रणसिंह, प्रधान आर्यसमाज, चन्द्रनगर, (स्मृति–स्व.खत्री) **लखनऊ** (15.05.16)
12. डोरीलाल आर्य, प्रधान, आर्यसमाज इन्दिरा नगर, **लखनऊ** (22.05.16)
13. रवीन्द्र त्यागी, विपुल खण्ड, गोमती नगर, **लखनऊ** (26.06.16)
14. मालती त्यागी, प्रिसिपल, भारतीय विद्या भवन, गोमतीनगर, **लखनऊ** (26.06.16)
15. कपिलदेव राय, पूर्व प्रवक्ता, **आजमगढ़** (01.07.16)
16. राजकुमार शास्त्री, प्रधान,, आर्य समाज, पारारमनगरा, **सीतापुर** (01.07.16)
17. भूपेन्द्र मेहरोत्रा, टाण्डा, **अम्बेडकरनगर** (14.07.16)
18. कर्नल चन्द्रमोहन गुप्त, अलीगंज, **लखनऊ** (01.08.16)
19. कुमुद गुप्ता, अलीगंज,, **लखनऊ** (12.08.16)
20. रामा आर्य 'रमा', स्वाध्यायकेन्द्र, नेवाजगंज, चौक **लखनऊ** (18.08.16)
21. मिनी स्वरूप, बसन्त विहार, **नई दिल्ली** (31.08.16)
22. मधुर भण्डारी, बसन्त कुंज, **नई दिल्ली** (31.08.16)
23. कमलेश पाल, अलीगंज, **लखनऊ** (31.08.16)
24. कर्नल पाल प्रमोद, गंगानगर, **मेरठ** (31.08.16)
25. आचार्य आनन्द मनीषी, प्रधान, आर्य समाज राजाजी पुरम, **लखनऊ** (01.09.16)
26. सुरेन्द्र प्रताप जौहरी, सुजानपुरा, आलमबाग, **लखनऊ** (11.09.16)
27. चित्रा जौहरी, सुजानपुरा, आलमबाग, लखनऊ (11.09.16)
28. रणसिंह, प्रधान आर्यसमाज, चन्द्रनगर, **लखनऊ** (18.09.16)
29. गोपाल चंद्र नन्दी, हरीनगर, **लखनऊ** (22.09.16)
30. सत्य प्रकाश आर्य, **बाराबंकी** (26.09.16)
31. बाँके बिहारी हर्ष, अवध पुरी, **फैजाबाद** (09.11.16)
32. कृष्ण स्वरूप चौधरी, विनीत खण्ड, गोमती नगर, **लखनऊ** (25.11.16)
33. सुधा चौधरी, विनीत खण्ड, गोमती नगर, **लखनऊ** (25.11.16)
34. आर.के.शर्मा, जानकीपुरम, **लखनऊ** (28.12.16)
35. डा.सत्यकाम आर्य, जानकीपुरम, **लखनऊ** (28.12.16)
36. आचार्य आनन्द मनीषी, जानकीपुरम, **लखनऊ** (28.12.16)
30. रामा आर्य 'रमा', नेवाजगंज, **लखनऊ** (28.12.16)
37. ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, जनरैलगंज, **लखनऊ** (28.12.16)
38. जितेन्द्र त्रिपाठी, जनरैलगंज, **लखनऊ** (28.12.16)
39. रवीन्द्र त्रिपाठी, जानकीपुरम, **लखनऊ** (28.12.16)
40. गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' आदिल नगर, **लखनऊ** (31.12.16)

संस्थापक
माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास
ज्वालापुर, हरिद्वार
एवं
'आर्य्य लोक वार्ता' हिन्दी मासिक, लखनऊ

बाल्यकाल मुगलसराय, फिर यौवन में, ग्राम धूमे, वाणी-
आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ आ गये। मन भा गये।
हिन्दी सत्याग्रह के नेता बने, कारागार- संन्यासी आर्य वानप्रस्थ-
झेला, फिर आर्यभिक्षु बनकर छा गये।। गौरव बढ़ा गये।।
वेद के प्रचार हेतु ग्राम
ओज मधुरस द्वारा जन
आत्मबोधा स्वामी
ज्वालापुर आश्रम का

स्वामी आत्मबोध सरस्वती जी महाराज

आर्य पर्वो की सूची : विक्रमी सम्वत् 2073-74 तद्नुसार सन् 2017

क्रम सं.	पर्व का नाम	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	दिन
१	लोहड़ी	माघ कृष्ण, प्रतिपदा, वि.२०७३	१३.०१.२०१७	शुक्रवार
२	मकर-संक्रान्ति	माघ कृष्ण, २, वि.२०७३	१४.०१.२०१७	शनिवार
३	गणतंत्र दिवस	माघ कृष्ण, १४, वि.२०७३	२६.०१.२०१७	गुरुवार
४	वसन्त-पंचमी	माघ शुक्ल, ५, वि.२०७३	०१.०२.२०१७	बुधवार
५	सीताष्टमी	फाल्गुन, कृष्ण, ८, वि.२०७३	१६.०२.२०१७	रविवार
६	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	फाल्गुन, कृष्ण, १०, वि.२०७३	२१.०२.२०१७	मंगलवार
७	शिवरात्रि (ऋषि-बोधोत्सव)	फाल्गुन, कृष्ण, १३, वि.२०७३	२४.०२.२०१७	शुक्रवार
८	पं.लेखराम बलिदान दिवस	फाल्गुन, शुक्ल, ३, वि.२०७३	०१.०३.२०१७	बुधवार
९	नवसंस्येष्टि (होली)	फाल्गुन, पूर्णिमा, वि.२०७३	१२.०३.२०१७	रविवार
१०	आर्य समाज स्थापना दिवस/ चैत्रशुक्ल प्रतिपदा/नवसंवत्सर/ उगाड़ी/गुणी पड़वा/चैती चाँद	चैत्र, शुक्ल, १, वि.२०७४	२८.०३.२०१७	मंगलवार
११	राम नवमी	चैत्र, शुक्ल, ९, वि.२०७४	०५.०४.२०१७	बुधवार
१२	पं.गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस	बैशाख, कृष्ण, ४, वि.२०७४	१५.०४.२०१७	शनिवार
१३	हरितृतीया (हरियाली तीज)	श्रावण शुक्ल, ३, वि.२०७४	२६.०७.२०१७	बुधवार
१४	श्रावणी उपाकर्म-रक्षाबन्धन	श्रावण, पूर्णिमा, वि.२०७४	०७.०८.२०१७	सोमवार
१५	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्रपद, कृष्ण, ८, वि.२०७४	१५.०८.२०१७	मंगलवार
१६	स्वतंत्रता दिवस	भाद्रपद, कृष्ण, ८, वि.२०७४	१५.०८.२०१७	मंगलवार
१७	विजयादशमी/दशहरा	आश्विन, शुक्ल, १०, वि.२०७४	३०.०९.२०१७	शनिवार
१८	स्वामी विरजानन्द जन्मदिवस/गांधी जयन्ती	आश्विन, शुक्ल, १२, वि.२०७४	०२.१०.२०१७	सोमवार
१९	दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव)	कार्तिक, अमावस्या, वि.२०७४	१९.१०.२०१७	गुरुवार
२०	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष, शुक्ल, ५, वि.२०७४	२३.१२.२०१७	शनिवार

नोट : देशी तिथियों में घट-बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

सौजन्य : कृष्णा जी, प्रिंटेक, पार्करोड, लखनऊ

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-19/838, प्रथम तल, रिंगरोड, इन्दिरानगर, लखनऊ-226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
: 9198080000

नवोन्मेष
कृष्णा जी, प्रिंटेक

E-mail - aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि
सामान्य सदस्य - 100 रु. वार्षिक
होता सदस्य - 1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक - 15,000 रु.
प्रतिष्ठापक - 50,000 रु.

सहयोग राशि निम्न बैंकों की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-

(1) बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक - आर्य लोक वार्ता
खाता सं. - 46900 1000 00651
खाते का प्रकार-बचत खाता

(2) बैंक-इलाहाबाद बैंक, ए-869, इन्दिरा नगर, लखनऊ।
IFSC - ALLAO211122
खाता धारक - आर्य लोक वार्ता
खाता सं. - 5022 3541 717
खाते का प्रकार-बचत खाता

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक', लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ

परामर्श एवं सहयोग
श्रीमती प्रियंका शर्मा, लखनऊ
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
श्रीमती रमा आर्य 'रमा' लखनऊ
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2, हिमांशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

ग्राम ग्राम में नगर नगर में, 'आर्य्य लोक वार्ता घर-घर में